G20
भारत 2023 INDIA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिम-ज्योति

अंक-5, वर्ष : 2023-24

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

बद्दी (हिमाचल प्रदेश)

सत्यमेव जयते

क.रा.बी.नि. ESIC
सामाजिक सुरक्षा SOCIAL SECURITY

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, गुरूग्राम में महानिदेशक महोदय डा. राजेन्द्र कुमार व बीमा आयुक्त श्री रत्नेश गौतम के कर कमलों से, क्षेत्रीय–कार्यालय, बद्दी, हिमाचल प्रदेश की ओर से, शील्ड प्राप्त करते हुए राजभाषा अधिकारी (प्र.) श्री हरपाल सिंह, प्रसन्नचित मुद्रा में

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

हिन्दी पत्रिका प्रतियोगिता

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी की हिन्दी गृह पत्रिका हिमज्योति (अंक 4) ने वर्ष 2021-2022 में क / ख / ग क्षेत्र से प्रकाशित पत्रिकाओं में से संपादन, साज–सज्जा एवं सामग्री–प्रबंधन के लिए प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मुख्यालय, नई दिल्ली
दिनांकः 22-06-2023

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

कलम, आज उनकी जय बोल

"पुष्प की अभिलाषा"

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी--माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर, हे हरि, डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर,
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ!
मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

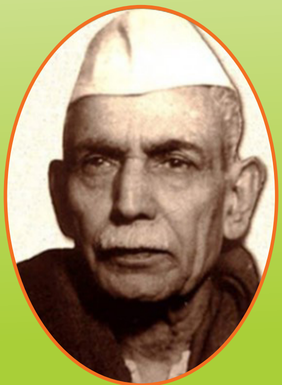

माखनलाल चतुर्वेदी

हिम-ज्योति

अंक–5 2023-24

(केवल विभागीय परिचालन के लिए)

संपादन समिति

संरक्षक
संजीव कुमार
प्रभारी उप निदेशक

संयोजक
हरपाल सिंह
सहायक निदेशक

संपादक
अभिषेक तिवारी
प्रवर श्रेणी लिपिक

संपादन समिति सदस्य

डा.राहुल शर्मा
चिकित्सा
सर्तकता अधिकारी

धर्मवीर
उप निदेशक

संध्या आजाद
कार्यालय अधीक्षक

संपादन सहयोग

अंकित कुमार
सहायक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है। इनसे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकाशक
राजभाषा शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
बद्दी (हिमाचल प्रदेश) –173205

सत्यमेव जयते

दूरभाष: 01795–245961, फैक्स 01795–245962, वी.ओ.आई.पी. 21795025
ई–मेल: rd-hp@esic.nic.in, rajbhasha.hp@esic.nic.in

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	महानिदेशक का संदेश	महानिदेशक	1
2.	बीमा आयुक्त (राजभाषा) का संदेश	बीमा आयुक्त (राजभाषा)	2
3.	संरक्षक की कलम से	संजीव कुमार (उप. नि. प्र.)	3
4.	संयोजक की कलम से	हरपाल सिंह सैनी, स. निदेशक	4
5.	संपादकीय	अभिषेक तिवारी, प्र,श्रे. लि.	5
6.	भारत में सामाजिक सुरक्षा: एक परिप्रेक्ष्य	प्रशांत बैजल, उप. निदेशक	6-7
7.	आस की डोर	हरपाल सिंह सैनी, स. निदेशक	8-9
8.	हिमाचल ईएसआईसी में का बा ?	हरपाल सिंह सैनी, स. निदेशक	10
9.	कामगारों की सामाजिक सुरक्षा में सरकार की भूमिका	नवजोत शर्मा, प्र.श्रे.लि.	11-12
10.	संकल्प ही शक्ति	अनिल कुमार, प्र.श्रे.लि.	13
11.	सफर: स्वयं की खोज का	डॉ. राहुल शर्मा	14-15
12.	संसदीय समिति निरीक्षण	फोटो गैलरी	16-17
13.	कायदे, कानून और नियमों से ज्येष्ठ और श्रेष्ठ है: निश्चल, निष्काम और शाश्वत प्रेम	सुभाषचंद्र गुप्ता	18
14.	हिमाचल प्रदेश के लोक-गीत	राजेश शर्मा, अधी.	19-21
15.	1729: एक जादुई संख्या!	सूरज धीमान,प्र.श्रे.लि	22
16.	जिंदगी	प्रदीप, आशुलिपिक	23
17.	कामकाजी महिला की विडंबना	अमन कुमार, प्र.श्रे.लि.	24
18.	बस्ते का बढ़ता बोझ	विकास कुमार, सहायक	25
19.	क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियाँ	फोटो गैलरी	26-27
20.	जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता	दुखमोचन गोपाल, का.आ.	28-29
21.	निर्धारित जाँच बिंदु	--	30-31
22.	मैं हिमाचल प्रदेश हूं	नरैण सिंह, सहायक	32
23.	जिंदगी	मनुज ठाकुर, सहायक	33
24.	जल	पप्पु कुमार, सहायक	33
25.	जिंदगी	रजनी, सहायक	34
26.	घर से दूर	आशीष, अ.श्रे. लि.	34
27.	पापा एक दिन लौट के आना	आशीष, अ.श्रे. लि.	35
28.	मुझे भी एक रविवार चाहिए	यशपाल भट्टी, का.आ.	35
29.	राजभाषा पखवाडा-2022	फोटो गैलरी	36-37
30.	तुम्ही से तो है	हरपाल सिंह सैनी, स. निदेशक.	38
31	मेरी प्यारी दुल्हनिया	अनिल कुमार, प्र.श्रे.लि.	39
32.	महिला दिवस समारोह	फोटो गैलरी	40
33.	अपना बचपन कैसा था ...	चाहत गोयल, का.आ.	41-42
34.	माँ	सूरजभान, सहायक	43
35.	आशापुरी माता मंदिर	संदीप कुमार, प्र.श्रे.लि.	44
36.	कविता	ऋषि, का.आ.	44
37.	भूर्शिंग महादेव (Bhurshing Mahadev)	सचिन गौतम, प्र.श्रे.लि.	45-47
38.	अवाहदेवी मंदिर (हमीरपुर, हि.प्र.)	राकेश कुमार, सहायक	48
39.	पहाड़ों की यात्रा	नीना कश्यप, प्र.श्रे.लि.	49
40.	यात्रा वृतांत केरल (Travelogue Kerala)	कमील अहमद, सहायक	50-51
41.	दक्षिण भारत के दर्शनीय स्थलों की मनोरम यात्रा	संतोष कुमार, सहायक	52-53
42.	प्रेस खिडकी	फोटो गैलरी	54

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, **Govt of India**)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

डॉ. राजेन्द्र कुमार
महानिदेशक

संख्याः ए-49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांकः 10.08.2023

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि उत्तर भारत में स्थित और देवभूमि के रूप में प्रसिद्ध हिमाचल प्रदेश का क. रा. बी. निगम क्षेत्रीय कार्यलय, बद्दी अपनी गृहपत्रिका 'हिम-ज्योति' के अंक-5 का प्रकाशन करने जा रहा है। निश्चिततः 'हिम- ज्योति' के आगामी अंक के प्रकाशन से क्षेत्रीय कार्यलय, बद्दी के अधिकारियों एवं कार्मिकों को हिंदी में मूल काम-काज करने तथा लेखन क्षमता में एक नई ऊर्जा प्राप्त होगी।

आशा है कि पत्रिका में प्रकृति की गोद में बसे हिमाचल प्रदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य से सराबोर लेख होंगे और साथ ही पत्रिका उद्देश्यों के अनुरूप राजभाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

(डॉ. राजेन्द्र कुमार)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt of India)
क.रा.बी.नि.
E.S.I.C

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

संख्याः ए-49/17/1/2016-रा.भा.

दिनांकः 21.07.2023

संदेश

क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी की गृहपत्रिका 'हिम - ज्योति' के अंक-5 का प्रकाशन, एक सुखद सूचना है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अधिकांश लाभार्थियों की अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी है। गृहपत्रिका का प्रकाशन निगम में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की कड़ी में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

विश्वास है कि 'हिम - ज्योति' का नवीन अंक क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी के कार्मिकों को हिंदी भाषा में कार्य करने हेतु प्रेरित करने की दिशा में सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिंदी के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति का मजबूत स्तंभ बने ।

शुभकामनाओं सहित।

21.7.23

रत्नेश कुमार गौतम

संरक्षक की कलम से...

हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा और भारत की राजभाषा है । य़ह विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जानी वाली भाषा है । एक भाषा के रुप में हिन्दी न केवल भारत की पहचान है बल्कि विगत एक हजार वर्षो से यह हमारे संस्कृति, सभ्यता एवं जीवन मुल्यों की संवाहक भी है । अपने विकास के क्रम में हिन्दी भाषा ने अंग्रेजी , अरबी, फारसी आदि जैसे अन्य भाषाओं को जहाँ अनेक शब्द दिए है वहीं उन भाषाओं के अनेक शब्दों एवं भाषा के तत्वों को ग्रहण भी किया है । इस प्रक्रिया में जहां एक ओर हिन्दी भाषा की समृद्धि हुई वहीं दूसरी ओर इसका सकारात्मक प्रचार-प्रसार भी हुआ है ।

क्षेत्रीय कार्यालय , हिमाचल प्रदेश के लिए यह अति गौरव की बात है कि हमारे गृह-पत्रिका हिम-ज्योति के पिछले संस्करण को उत्कृष्ट पत्रिका की श्रेणी में मुख्यालय द्वारा अखिल भारतीय लेवल पर प्रथम पुरस्कार हेतु पुरस्कृत किया गया है । सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अपने लेखों, कहानियाँ, कविताओं आदि के माध्यम से निरंतर सक्रिय सहभागिता अत्यधिक प्रशंसनीय है । इसी क्रम में हिम-ज्योति कि पंचम अंक प्रस्तुत करते हुए बहुत खुशी एवं सौभाग्य महसूस हो रहा है एवं उम्मीद करता हूँ कि इसमें सम्मिलित सभी रचनाएं आपकी अपेक्षा पर पुर्णत: खरी उतरेंगी ।

संजीव कुमार
प्रभारी उप-निदेशक

प्रभारी राजभाषा अधिकारी की कलम से ...

हिम-ज्योति के अंक-5 को आपके समक्ष रखते हुए अत्यंत हर्ष और उत्साह की अनुभूति हो रही है। मातृभाषा की सेवा का विषय अपने आप में ही संतोष प्रदान करता है। ऊपर से प्रभारी राजभाषा अधिकारी होने का दायित्व इस सेवा को थोड़ा और गंभीरता का लबादा ओढ़ा देता है। ऐसी कशमकश में अपने जनों के सहयोग के साथ कदमताल करते-करते एक वर्ष और पीछे बीत गया लेकिन ये कोई उदासी का विषय नहीं है बल्कि इसी कालखंड में सहकर्मियों द्वारा इस पत्रिका रूपी हवन-कुंड में आहूतियों के रूप में डाली गई रचनाएं आज एक मनमोहक शैली और अंदाज में आपके समक्ष पुन: प्रस्तुत है ।

राजभाषा शाखा के उत्साह में यह तथ्य और भी वृद्धि करता है कि हर बार पत्रिका का अंक प्रकाशन के पश्चात ऐसा लगता है कि चूंकि अब कार्मिक वर्ग की तरफ से अपनी मूल रचनाएं आ चुकी है अत: अगले अंक के लिए इस प्रकार के बौद्धिक स्तर की रचनाएं संग्रह करना कठिन होगा परंतु सभी के उत्साहित जज्बे के कारण न केवल ज्यादा रचनाएं मिलती है अपितु उनकी गुणवत्ता का स्तर भी पहले की तुलना में उच्चतर होता है और यह संपादकीय मंडल के कार्य को मुश्किल बना देता है कि कौन सी रचना को प्रकाशन हेतु पत्रिका में शामिल किया जाए। यही गृह पत्रिका का उद्देश्य भी है कि न केवल सभी कार्मिक वर्ग के रचनात्मक पहलू को क्रियाशील किया जाए अपितु उनकी सृजन रचनाओं को एक मानक स्तर का मंच भी उपलब्ध कराया जाए। मेरे विचार से यह भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका अदा करता है।

सभी को मेरा हार्दिक अभिनंदन ! आगामी अंकों के प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं ।

हरपाल सिंह

हरपाल सिंह

सहायक निदेशक

संपादकीय

रोज के कार्यालय की दिनचर्या के साथ साथ पत्रिका के सम्पादन की जिम्मेदारी मिलना सहज ही हर्ष और रोमांच की अनुभूति करा देता है । क. रा. बी. निगम, बद्दी, हिमाचल प्रदेश के अधिकारियों व कर्मचारियों के द्वारा मूल रचित रचनाओ का पुलिंदा मेरे हाथ में था । रचनाओ का स्तर इतना उत्कृष्ट था कि सबसे पहली दुविधा तो यह थी किस की रचना को पत्रिका के इस अंक में स्थान दिया जाए और किसे छोड़ा जाए । यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य था । खैर सम्पादन समिति के सदस्यों के अमूल्य सहयोग से हम सम्पादन के इस चरण से आगे बढ़ पाये । परंतु इस बात का भी मलाल जरूर हुआ की इस पत्रिका के कुल पृष्ट 100 क्यों नहीं है और हमें इन अभिव्यक्तियों को दर्ज करने हेतु केवल 60 पेज की सीमा में बांध के क्यों रख दिया गया । सम्पादन में संतुलन बनाते हुए, सम्पादन समिति द्वारा यह निर्णय लिया गया की जिन अधिकारियों व कर्मचारियों की सभी रचनाओ को इस अंक में स्थान नही मिल पाया, उनकी शेष रचनाओ को हिम ज्योति के अगले अंको के लिए संरक्षित कर लिया जाये ।

हमारा देश भारत आज आधुनिक स्वर्णिम काल से गुजर रहा है । एक ओर जहां भारत G-20 सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहा है और वैश्विक स्तर पर देशों का नेतृत्व कर रहा है, दूसरी ओर सहज भाव से भारत के पूर्णतः स्वदेशी अंतरिक्ष चंद्रयान-3 अपनी सफलता के झंडे चाँद की सरजमीं पर गाड़ रहा है । चाहे वैश्विक संकट हो , या राजनैतिक अस्थिरता या कोरोना का संकट या प्राकृतिक त्रासदी, आज पूरा विश्व आशा भारी निगाहों से भारत की ओर देखता है । हमारा देश किसी भी परिपेक्ष में कदम पीछे नहीं हटाता है, चाहे वो वैक्सीन हो या फिर तुर्की में भूकंप पीड़ितों के लिए चलाया गया ऑपरेशन दोस्त।

सर्व शक्ति सम्पन्न होने के बावजूद भारत देश ने सभी देशों को साथ ले चलने की परंपरा पर जोर दिया और वसुदेव कुटुम्बकम् को विश्व धरातल पर सफलतापूर्वक चरितार्थ किया है ।

हिम ज्योति के इस अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं सभी अधिकारियों / कर्मचारियों / पाठकगणों का सहृदय धन्यवाद करना चाहूँगा और आशा करता हूँ कि यह अंक आपके लिए ज्ञानवर्धक व रुचियों से भरा होगा ।

अभिषेक तिवारी

(प्र.श्रे.लि.)

भारत में सामाजिक सुरक्षा: एक परिप्रेक्ष्य

प्रशांत बैजल
उप निदेशक

सामाजिक सुरक्षा

सामाजिक सुरक्षा का अर्थ एक ऐसा कार्यक्रम है जिसके लिए सरकार को नियोक्ताओं, श्रमिकों और सरकार (जहां आवश्यक हो) से योगदान के माध्यम से वित्त पोषित एक प्रणाली बनाने की आवश्यकता होती है, जिसका उपयोग दो श्रमिकों और उनके आश्रितों के लाभ (मौद्रिक और गैर-मौद्रिक दोनों) के प्रावधान करने के लिए किया जा सकता है। कुछ आकस्मिकताओं के कारण सहायता की आवश्यकता होती है। सामाजिक सुरक्षा अनिवार्य रूप से लोगों में एक निवेश है जो उन्हें परिस्थितियों में बदलाव के लिए समायोजित करने के लिए सशक्त बनाता है और सामाजिक सुरक्षा अधिनियम के प्रावधानो को स्वचालित सामाजिक और आर्थिक स्थिरता के रूप में प्रशासित करता है और अधिक टिकाऊ अर्थव्यवस्था में संक्रमण में मदद करता है।

भारत में सामाजिक सुरक्षा: संवैधानिक संदर्भ

भारत के संविधान में वे सभी तत्व शामिल हैं जो राज्य पर सामाजिक सुरक्षा का अधिकार प्रदान करने और उसकी रक्षा करने का दायित्व डालते हैं। संविधान की प्रस्तावना समाजवादी राज्य की स्थापना का प्रावधान करती है। समाजवाद का सिद्धांत उद्देश्य आय, स्थिति और जीवन स्तर की असमानता को खत्म करना और कामकाजी लोगों को जीवन का एक सभ्य स्तर प्रदान करना है। इसके अलावा, इसे अपने सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय सुरक्षित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन उद्देश्यों को आगे भारतीय संविधान में नीति-निर्माताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों यानी संविधान के भाग- IV में वर्णित राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत में विस्तृत किया गया है। संविधान का अनुच्छेद 41 राज्य को अपनी आर्थिक क्षमताओं की सीमा के भीतर आजीविका के पर्याप्त साधन प्रदान करने, काम करने, शिक्षा पाने और बेरोजगारी, बुढ़ापा, बीमारी और अक्षमता जैसे कुछ मामलों में सार्वजनिक सहायता के अधिकार को सुरक्षित करने के लिए प्रेरित करता है। अनुच्छेद 42 काम की न्यायोचित और मानवीय स्थिति और मातृत्व राहत प्रदान करता है। अनुच्छेद 43 श्रमिकों के लिए जीवित मजदूरी से संबंधित है और अनुच्छेद 43-ए उद्योगों के प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी को सुरक्षित करने का इरादा रखता है। अनुच्छेद 47 अपने लोगों के पोषण स्तर और जीवन स्तर को बढ़ाने और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए राज्य के प्राथमिक कर्तव्य के रूप में सूचीबद्ध करता है। इनके अलावा, सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक बीमा और श्रम कल्याण को भी श्रमिक वर्ग और उनके परिवारों के हितों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के इरादे से संविधान की समवर्ती सूची में शामिल किया गया है।

भारत में मौजूदा सामाजिक सुरक्षा प्रावधान

भारत में मौजूदा सामाजिक सुरक्षा कानून भी भूमि के सर्वोच्च कानून यानी भारत के संविधान के प्रावधानों से अपनी ताकत और भावना प्राप्त करता है। ये अनिवार्य सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान करते हैं जो या तो नियोक्ताओं और श्रमिकों की लागत पर संयुक्त योगदान की एक प्रणाली के आधार पर होता है। इसमें नियोक्ता द्वारा सामाजिक सुरक्षा प्रणाली में अहम भूमिका दी जाती है। ईएसआई अधिनियम, 1948 और ईपीएफ और विविध जैसे कानून समर्थित योजनाओं के अलावा प्रावधान अधिनियम 1952, आदि केंद्रीय स्तर, राज्य स्तर और

स्थानीय स्व-सरकारी स्थानीय सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की एक बहुतायत प्रत्यक्ष मौद्रिक और गैर-मौद्रिक लाभ प्रदान करने वाली योजनाओं को लागू किया गया है जैसे आरएसबीवाई, एनओएपीएस, आईजीएन डीपीएस, आईजी एनडब्ल्यूपीएस आदि।

यद्यपि वैधानिक सामाजिक सुरक्षा प्रावधान पूरे औपचारिक क्षेत्र (उस क्षेत्र में अनौपचारिक रोजगार सहित) के लिए कवरेज पर विचार करते हैं, वास्तव में वे संगठित कार्यबल के केवल एक छोटे से हिस्से को कवर करते हैं जिसका एक संगठन के भीतर प्रत्यक्ष नियमित नियोक्ता-कर्मचारी संबंध होता है। केवल 6% अनौपचारिक कार्य समूह के पास किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा (एनसीईयूएस, 2006) तक पहुंच थी। अत: योजनाओं की पहुंच बहुत सीमित है।

सामाजिक सुरक्षा संहिता 2020 के कुछ महत्वपूर्ण प्रावधान :

- संहिता ने असंगठित क्षेत्री के श्रमिकों, निश्चित अवदिक के कर्मचारियों और गिग श्रमिकों, प्लेटफार्म श्रमिकों, अंतर राज्य प्रवासी श्रमिकों आदि को शामिल करके कवरेज क्षेत्र को व्यापक बना दिया जाता है।
- कर्मचारी राज्य बीमा निगम तथा कर्मचारी भविष्य निधि की व्याप्ति भी बढ़ाई गई है।
- असंगठित क्षेत्री के कामगारों के लिए राष्ट्रीय डेटाबेस तैयार करने के उद्देश्य से इन सभी श्रमिकों का पंजीकरण एक ऑनलाइन पोर्टल पर किया जाएगा और यह पंजीकरण एक सरल प्रक्रिया के माध्यम से स्व-प्रमाणन के आधार पर किया जाएगा। इसी क्रम में ई-श्रम-पोर्टल का निमार्ण किया गया गया है।
- सामाजिक सुरक्षा निधि द्वारा असंघठित कामगारों हेतु सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को लागू करने के लिए वित्तीय व्यवस्था बनाई जाएगी।
- सामाजिक सुरक्षा लाभों का उद्देश्य मजदूरी निर्धारित करने में एकरूपता है।
- सामाजिक सुरक्षा लाभों को कम करने वाले वेतन की अनुचित संरचना को हतोत्साहित करने हेतु उच्चतम सीमा के साथ विशिष्ट बहिष्करण (Specific Exclusion) हेतु प्रावधान किए गए हैं।
- निरीक्षकों की मौजूद भूमिका के विपरीत संहिता निरीक्षक-सह-सुविधाकर्ता की एक बढ़ी हुई भूमिका प्रदान करती है जिससे नियोक्ता अनुपालन के लिए समर्थन और सलाह प्राप्त कर सकते हैं।
- मानव संसाधन की मांग को पूरा करने और रोजगार सूचना की निगरानी के लिए व्यवसाय केंद्र की स्थापना की जाएगी।

निष्कर्ष

एक व्यापक सामाजिक सुरक्षा संरचना में उत्पादकता में सुधार और सौहार्दपूर्ण श्रम संबंधों को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। यह, निश्चित रूप से, सामाजिक लागतों के परिहार में जोड़ देगा और देश में सामाजिक और आर्थिक विकास की उन्नति को बढ़ावा देगा। संकट के समय में उनकी सुरक्षा के कानूनी अधिकार के रूप में सामाजिक सुरक्षा कवरेज की उपस्थिति के कारण श्रमिकों की ओर से काम करने की इच्छा में वृद्धि हासिल की जा सकती है। कुल मिलाकर, हमारे आर्थिक विकास के रास्ते में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर यह व्यापक सामाजिक सुरक्षा कानून न केवल हमारे कर्मचारियों के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करेगा, बल्कि एक बेहतर निवेश माहौल का भी नेतृत्व करेगा जिससे हमारी अर्थव्यवस्था की प्रतिस्पर्धात्मकता और अधिक होने की संभावना है।

***

आस की डोर

हरपाल सिंह सैनी
सहायक निदेशक

पर्दा उठता है।

नैपथ्य में प्रथम दृष्टया एक अस्पताल के वार्ड कमरे का नजारा दिखाई देता है।

कुछ मरीज अपने-अपने आवंटित पलंग पर लेटे हैं। इक्का-दुक्का बैड खाली है। मानो दुसरे बैड का उपहास उड़ा रहे हों कि देखो हम तो खाली ही खुश हैं।

नर्सें अपने पारम्परिक परिधान में तीमारदारी में लगी हैं। इक्का-दुक्का मरीजों के रिश्तेदार नर्सों से अपनी जिज्ञासा सम्बधी जानकारी हासिल करने का हर संभव प्रयास कर रहें हैं।

तभी बदहवास अधेड़ उम्र की औरत रोती हुई वार्ड में प्रवेश करती है और लगभग चीखते हुए नर्सों से गुहार लगाती है कि उसके बेहोश पति का चैक- अप करें। नर्सें रजिस्टर खोलते हुए प्रश्न दागती हैं।

नर्सः- यह ईएसआई अस्पताल है और यहां सिर्फ बीमीत व्यक्तियों का ही इलाज होता है। अपने पति के ईएसआई के ब्यौरा दिखाईए।

अधेड़ औरतः- जी मैडम जी, हमारा घरवाला गुलशन सीमेंट फैक्टरी में काम करता है और वहां ड्यूटी के वक्त एक पिल्लर इस पर गिरने से चोट लग गई है। कृपया इलाज करें। यह मेरे पति का आई.डी. कार्ड है।

नर्सः- ठीक है, बैठो, मैं डॉक्टर और रजिस्ट्रेशन क्लर्क को बुलाती हूँ।

दूसरा दृश्यः डीलिंग क्लर्क कमील अहमद, बीमार व्यक्ति का आई.डी. लेकर कम्प्यूटर की-बोर्ड पर कुछ टक-टक करता है। अधेड़ उम्र की औरत बड़ी आतुर निगाहों से उस तरफ देखती है कि कहीं कमील साहब के मुँह से कोई नाकारात्मक बात ना निकल जाए और मेरे पति का ईलाज कहीं रुक ना जाए।

कमील अहमद क्लर्कः- ऊपर नजर उठाए बिना – आपके पति के विवरण चैक कर लिए गए हैं। मैनें इलाज की रिक्वैस्ट **"धनवन्तरी माड्यूल"** पर डॉक्टर साहब को फारवर्ड कर दी है और साथ ही आपके पति की कंपनी के एच.आर. मैनेजर को दुर्घटना रिपोर्ट फाईल करने हेतु बोल दिया है। औरत कृतज्ञता से दोनों हाथ जोड़ देती है।

तीसरा दृश्यः वार्ड का दृष्य पुनः दृष्टिगोचर होता है।

डॉक्टर मरीज रामधन का चैक-अप कर कागज पर कुछ लकीरें खीचता है और नर्स को सम्बोधन करता है।

डॉक्टरः- चोट गम्भीर तो नहीं है पर रिस्क नहीं ले सकते। एम.आर.आई. स्कैन जरूरी है अतः मरीज को आगामी इलाज हेतु फोर्टिज अस्पताल में रैफर कर रहा हूँ।

अधेड़ औरतः- (लगभग चीखते हुए) साहब हमारे पास न तो गाड़ी है न पैसा, हम कैसे इनको लेकर जाएंगे। इलाज के पैसे कहां से लाएंगे।

डॉक्टरः- चिंता न करो। यहां से एंबुलैंस में आप भी साथ जाएं और पूरा इलाज का खर्चा, दवाइयों और भोजन इत्यादि बिना किसी खर्चे के होगा। और हां, शाखा कार्यालय में क्लेम फार्म प्रेषित कर रहा हूँ आपको रामधन के इलाज की अवधि का उपयुक्त वेतन प्राप्त हो जाएगा।

शिक्षक से सवाल करना अच्छी बात है क्योंकि यह आपको ज्ञान के मार्ग की ओर ले जाता है।

औरत मन ही मन मेः- हे भगवान, अरे मैं ईएसआई को दिया जाने वाला 0.75% अंशदान न करवाने हेतु भी रामधन से कितना लड़ी थी।

और आज यही डिपार्टमैंट मेरे सामने भगवान का दूसरा रूप लेकर आ गया है। जहां न केवल इलाज और दवाईयां एक जाने माने अस्पताल से बिना किसी खर्चे के की जा रही है अपितु वेतन का कुछ हिस्सा भी मुझे इनकी तीमारदारी की अवधि में प्राप्त होगा।

और तो और, यहां का स्टाफ नर्स और डॉक्टर सब कितने दयालु और हैल्पफुल हैं।

भगवान का लाख-लाख शुक्र करती हुई अधेड़ औरत बाहर प्रांगण में आती है और वहां उद्यान में एक फूल के पौधे की जड़ों में अपने हाथ के आगोश से कुछ रखती है। जो कि उसके पूजा स्थल से पूजा किए फूलों को कुछ अंश थे।

भगवान का धन्यवाद करती, कृतज्ञ निगाहों से वह अधेड़ औरत एंबुलैंस में चढ़ जाती है।

दूर कहीं मंदिर मे शंख की ध्वनि और घंटियों की गूँज नेपथ्य मे सुनाई देती है ।

पर्दा गिरता है।

***

हिमाचल ईएसआईसी में का बा

हरपाल सिंह सैनी
सहायक निदेशक

हिमाचल ईएसआईसी में का बा
हिमाचल ईएसआईसी ऑफिस में बहार बा

इलाज बेहिसाब बा
सुविधाएं बेशुमार बा
बीमित के चेहरे पर , खूशीय़ाँ अपार बा
हिमाचल ईएसआईसी ऑफिस मा बहार बा

सुविधा समागम बा
स्टाफ पूरा ट्रेन्ड बा
हर दिक्कत मुश्किल का हल बा
संतुष्टि का आलम अथाह बा
हिमाचल ईएसआईसी ऑफिस मा बहार बा

योजना सभी बेमिसाल बा
बीमित हित का ख्याल बा
व्याप्ति है कोख से कब्र तक
प्राइवेट नौकरी का न मलाल बा
बीमित के हितलाभ का सरोकार बा
हिमाचल ईएसआईसी ऑफिस मा बहार बा
कदम कदम पर डिस्पेंसरी बा
शाखाओं का जाल बा
डॉक्टर व दवाइयां उपलब्ध बा
और ये नहीं कोई उपकार बा
हिमाचल ईएसआईसी ऑफिस मा बहार बा

संजीव कुमार उप निदेशक महोदय का राज बा
हरपाल प्रभारी की भी साथ में कदमताल बा
अंकित पहलवान बेलगाम बा
राजभाषा शाखा का भी जलवा ए जलाल बा
पुरस्कारों से भरी झोली इसने
साथी सहकर्मियों को भी न मलाल बा

हर कसौटी पर खरा उतरता
हिमाचल की टीम का कमाल बा
टास्क कोई भी आए
योगदान सबका सौ फीसदी बा
प्रभु की कृपा भी अपरंपार बा
हिमाचल ईएसआईसी ऑफिस मा बहार बा

हिमाचल ईएसआईसी में का बा
हिमाचल ईएसआईसी ऑफिस मा बहार बा

***

कामगारों की सामाजिक सुरक्षा में सरकार की भूमिका

नवजोत शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

ऐसे देश में जहां श्रम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है वहां इस बात की संभावना रहती है कि गरीब लोग कम पारिश्रमिक पर काम करना स्वीकार कर लेते हैं ताकि आय प्राप्त हो सके। इस स्थिति में उद्यमी अपने लाभ के लिए उक्त स्थिति का फायदा उठाने की स्थिति में रहता है। इसलिए सरकार कानून बनाती है ताकि ऐसी स्थिति मे किसी का शोषण न हो और व्यापार और औद्योगिक घरानों के मालिक श्रमिकों या कर्मचारियों को मूल न्यूनतम वेतन देने के लिए बाध्य हों। अकुशल, अर्धकुशल और कुशल कामगारों के विभिन्न वर्ग के लिए समय-समय पर न्यूनतम दरों को संशोधित किया जाता है। श्रमिकों के लिए सुरक्षा, स्वास्थ्य, पेंशन, मुआवजे को नियंत्रित करने वाले कानून हैं। महत्वपूर्ण कानून नीचे सूचीबद्ध हैं-

- कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948।
- न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948।
- जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम 1974
- वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) नियम 1988
- कर्मचारी परिवार पेंशन योजना 1971
- कर्मचारी सामान्य भविष्य निधि नियम 1995
- व्यक्तिगत चोट (मुआवजा बीमा) योजना 1972
- न्यूनतम मजदूरी (केंद्रीय) नियम 1950
- मातृत्व हितलाभ अधिनियम 1961
- कामगार मुआवजा अधिनियम 1923

ऐसे कानूनों का अंतिम उद्देश्य श्रमिकों के शोषण को रोकना और अप्रत्यक्ष और नकारात्मक प्रभाव के लिए समाज को क्षतिपूर्ति के माध्यम से सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना है। उदाहरण के लिए, बाल श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम, 1986 का मुख्य उद्देश्य सामाजिक सरोकार को संबोधित करना और 14 वर्ष की आयु पूरी नहीं करने वाले बच्चों के रोजगार को रोकना है।

कार्यस्थल पर श्रमिकों की सुरक्षा

कारखाना अधिनियम 1948 मुख्य रूप से सुरक्षा उपाय प्रदान करने और कारखानों में कार्यरत श्रमिकों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए प्रख्यापित किया गया था। प्राथमिक उद्देश्य कारखानों में कार्यरत श्रमिकों को औद्योगिक और व्यावसायिक खतरों से बचाना है। उस उद्देश्य के लिए यह मालिकों या कब्जाधारियों पर कुछ दायित्वों को लागू करने का प्रयास करता है ताकि श्रमिकों को सुरक्षित माहौल का प्रावधान हो तथा दुर्घटनाओं से उनके स्वास्थ्य को कम नुकसान हो और सुरक्षा के अनुकूल रोजगार की स्थिति को सुनिशचित किया जा सके।

स्वास्थ्य प्रावधान

कारखाना अधिनियम का मुख्य उद्देश्य श्रमिकों के स्वास्थ्य लाभ की ओर है। अधिनियम के स्वास्थ्य अध्यायों में

धारा 11 से 19 तक विनिर्देश शामिल हैं। कर्मचारियों के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संबंधी मामलों की सुरक्षा के लिए कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 को अधिनियमित किया गया था। यह एक व्यापक सामाजिक सुरक्षा योजना है जिसे संगठित क्षेत्र में कर्मचारियों को बीमारी, मातृत्व, विकलांगता, और रोजगार चोट व मृत्यु की घटनाओं के खिलाफ सामाजिक रूप से सुरक्षा के कार्य को पूरा करने और बीमित कर्मचारियों और उनके परिवारों को चिकित्सा देखभाल प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह एक एकीकृत आवश्यकता आधारित सामाजिक बीमा योजना की परिकल्पना है जो आकस्मिकताओं में श्रमिकों के हितों की रक्षा करेगी। अधिनियम श्रमिकों और उनके तत्काल आश्रितों को यथोचित अच्छी चिकित्सा देखभाल की गारंटी भी देता है। अधिनियम ने मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961 और कामगार मुआवजा अधिनियम 1923 के तहत नियोक्ताओं को उनके दायित्व से मुक्त किया है। ईसी तरह कर्मचारी भविष्य निधि संगठन बेहतर भविष्य को सुरक्षित करने के लिए श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी कल्याणकारी योजना है। संगठन श्रम और रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा शासित है और 1951 में लॉन्च किया गया था।

कानूनों को लागू करना

एक बार कानून बन जाने के बाद यह सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है कि सभी प्रभावित पक्ष कानूनों का पालन करें। सरकार के पास एक विस्तृत नौकरशाही और विभिन्न एजेंसियां हैं जिन्हें यह सुनिश्चित करने का काम सौंपा गया है कि सभी कानूनों का अक्षरश: पालन किया जाए और यदि कोई उल्लंघन होता है तो उसे उद्यमी के संज्ञान में लाया जाता है और यदि आवश्यक हो तो जुर्माना भी लगाया जाता है।

निष्कर्ष रूप से, हम कह सकते हैं कि आधुनिक सामाजिक सुरक्षा प्रणाली में सरकार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाँकि, नवीनतम शोध बताते हैं कि हमारे पास अभी भी सामाजिक सुरक्षा के लिए एक व्यापक स्थायी प्रबंधन प्रणाली का अभाव है। ऐसे कानूनों की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए, सभी कर्मचारियों और श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लक्ष्य के साथ सामाजिक सुरक्षा से संबंधित कानूनों को संशोधित और समेकित करने के लिए एक अधिनियम लाया गया है जिसका नाम है सामाजिक सुरक्षा कोड है। सामाजिक सुरक्षा पर कोड का उद्देश्य, संगठित या असंगठित क्षेत्र से संबंधित सभी कर्मचारियों और श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान करने का है तथा व्यापक लक्ष्य के साथ सामाजिक सुरक्षा से संबंधित मौजूदा श्रम कानूनों में संशोधन और समेकित करना है।

***

संकल्प ही शक्ति

अनिल कुमार
प्र.श्रे.लि.

संकल्पों से ही दूर हुई जीवन की हर बाधा।

संकल्पों से ही मानव जीवन संकट में हित साधा।

संकल्पः- प्रभु कहते है कि संकल्प में बहुत शक्ति है, संकल्प के माध्यम से प्रत्येक आत्मा अपने में बहुत बदलाव ला सकती है। वह बदलाव प्रभु के सुमिरन से निश्चित आता है। इसके लिए सुबह उठ कर ही प्रभु का ध्यान करें। प्रभु के ध्यान मात्र से ही उनकी सकारात्मक उर्जा हमारे शरीर में प्रवेश करती है। हमारे संकल्प अपने हित के साथ-साथ जन हित में भी होने चाहिए जिससे मेरे प्रत्येक कर्म से सर्वत्र जगत की आत्मांए प्रसन्नता महसूस करें। इसके लिए प्रत्येक आत्मा के प्रति हमारी सकारात्मक सोच महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पूरे दिन में जब भी समय लगे, प्रभु का ध्यान जरुर करें। उनके केवल ध्यान से ही मनुष्य प्रसन्नता महसूस कर सकता है। उन्हें हमेशा अपने साथ महसूस करें। इसके लिए विश्वास महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रभु के प्रति उनके होने का विश्वास ही भक्ति की प्रथम सीढी है।

रात को सोने से पहले संकल्प करें कि मेरा आज का दिन बहुत अच्छा बीता है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ, मेरे कर्म से प्रत्येक आत्मा प्रसन्नता महसूस करती है। कोई भी आत्मा अगर बीमार हो तो उसे भोजन करते समय तथा दवाई खाते समय और पानी पीते समय प्रभु का ध्यान जरूर करना चाहिए। यह ध्यान करने की आदत इंसान में बहुत सकारात्मक बदलाव ला सकती है। इसके साथ-साथ हमेशा सही तथा सकारात्मक सोच भी महत्वपूर्ण है। जिससे इंसान की सकारात्मक उर्जा और धैर्य बढ़ जाता है।

संकल्प शक्तिः-

प्रभु से मत कहो मेरी समस्यांए बहुत अधिक हैं,

समस्याओं से कह दो, मेरे प्रभु मेरे बहुत निकट हैं।

***

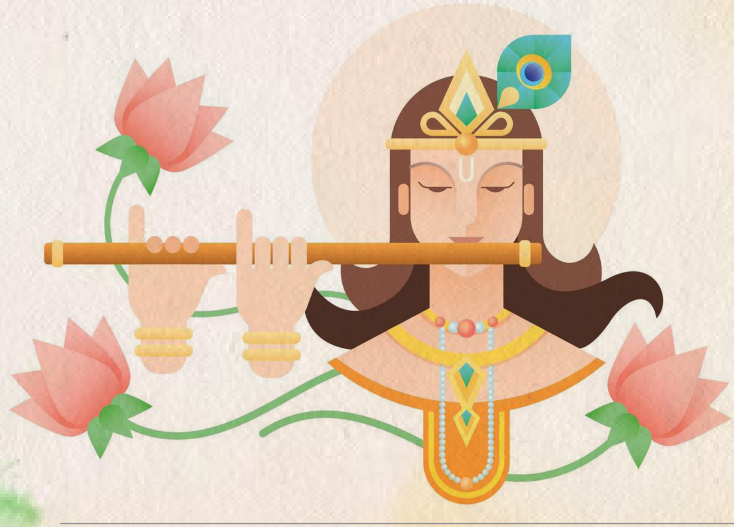

कठिन परिश्रम से सफलता मिलती है, आलस्य से पराजय, अहंकार से कठिनाइयाँ।

सफर : स्वयं की खोज का

डॉ. राहुल शर्मा

हम मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं जो हमेशा कुछ नया करने की तलाश में रहते हैं। इस कुछ नए की तलाश में अपने मोबाईल में इंस्टाग्राम रील्स, फेस्बूक या यूट्यूब पर लगे रहते हैं। लेकिन इन सबने हमें चार दीवारी का गुलाम बना दिया है। इन दिनों आप अपने घर पर सब कुछ ऑनलाइन ऑर्डर कर सकते हैं, लेकिन क्या ऐसा कोई साधन है जिससे आप घर बैठे किसी और जगह पर जाने का अनुभव ले सकें। मेरे हिसाब से अभी तो यह मुमकिन नहीं है। जब हम महामारी के कारण घर पर बैठने को मजबूर थे, तब हम सब इतने उदास और निराश क्यों थे? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम नए अनुभवों की लालसा रखते हैं। हम उड़ना चाहते हैं, ऐसा कुछ अद्‌त अनुभव करना चाहते है जो कहीं और नहीं मिल सकता।

ये सफर...क्यों है जरूरी ?

आज की इस तनाव भरी ज़िंदगी में, सुकून के दो पल हर कोई ढूंढ रहा है। कई बार ऐसा लगता है कि क्या हमें यह मनुष्य का जन्म सिर्फ 9-5 दफ्तर का काम और बाकी समय घर के काम करने के लिए मिला है? हम मशीन नहीं हैं जो केवल एक निर्धारित कार्यक्रम/दिनचर्या का पालन करते रहे। हम अपने लिए क्या कर रहे है? आप सभी को कुए का मेंडक की कहानी याद है ना। उस मेंडक को लगता था कि यह कुआँ उसकी सारी दुनिया है, पर वह गलत था। जब वह मेंडक कुए से बाहर आया तब उसे पता चला कि दुनिया तो बहुत बड़ी और सुंदर है। जब आप अपने आरामदायक घर से दूर कदम रखते हैं और अपने आस-पास क्या है, इसकी खोज शुरू करते हैं, तो आप मूल रूप से अपनी दृष्टिकोण को बदल रहे हैं और नई चीजें सीखना शुरू कर रहे हैं। जब आप कोई भी यात्रा करते हैं, तब वह यात्रा आपको विभिन्न जातियों, परंपराओं और रीति-रिवाजों के लोगों के साथ घुलने-मिलने और उनसे कुछ नया सीखने का एक अनूठा अवसर देती है। बराक ओबामा ने भी लोगों से मिलने जुलने के विषय में यह हि कहा था कि,

"किसी जगह को देखने, एक अलग संस्कृति का अनुभव करने और नए विचारों के संपर्क में आने मे कुछ अलग ही बात है"।

और मेरी मानिये तो जब आप सुबह का उगता सूरज या फिर शाम को डूबते हुए सूरज को देखते हुए ठंडी ठंडी हवा के साथ एक चाय की चुस्की भरेंगे तो सुकून अपने आप रूह तक पहुँच जाएगा। मैंने खुद ऐसा महसूस किया है, उस पल की कुछ तस्वीरें आपके सामने है।

पर ये सफर शुरू कैसे करें ?

परमपावन दलाई लामा जी ने कहा है "साल में एक बार ऐसी जगह जाएं जहां आप पहले कभी नहीं गए हों"। पहले कहाँ जाना है यह तय नहीं कर पा रहे??? भारत में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। अगर इच्छा है तो दुनिया में 190 से भी ज्यादा देश है। किसी एक को चुनें और वहाँ जाएं। आप अतुल्य! भारत की वेबसाईट (www.incredibleindia.org) पर जा कर जरूरी जानकारी ले सकते है। आप विदेश जाना चाहते है तो उस देश की पर्यटन से संबंधित वेबसाइटें देखें। आज के दिन में यूट्यूब पर बहुत से चैनल्स है जो यह सब जानकारी मुफ़्त में उपलब्ध करवा रहे है। भारत सरकार अपने कर्मचारियों के लिए अवकाश यात्रा रियायतें (LTC) प्रदान करती है ताकि वे भारत में विभिन्न स्थानों की यात्रा कर सकें और अविश्वसनीय भारत को खुद से अनुभव कर सकें। आप उन किरायो मे रियायतों का लाभ उठा सकते हैं। हमारे संगठन और भारत सरकार के सौजन्य से हमारे लिए हॉलिडे होम और टूरिंग रेस्ट रूम का एक विशाल नेटवर्क स्थापित किया है। आप इनका भी उचित लाभ उठा सकते है।

सफर के लिए पैसे की व्यवस्था कैसे करें?

इन दिनों यात्रा करना बहुत महंगा है। पैसे की तंगी की वजह से घूमने का हम सबसे आखिर में सोचते है। ऐसी नौबत नहीं आए इसके लिए क्या सकते है? अपनी मासिक कमाई का लगभग 10% बचाएं एवं इस धनराशि को SIP के माध्यम से म्यूचुअल फंड अथवा: बैंक में RD के रूप में निवेश करें। कुछ निजी कंपनियाँ हैं, जिन्होंने SAVE NOW, BUY LATER की सुविधाएं शुरू करी हैं, जैसे Multiple, easemytrip, इत्यादि। इससे आपको बचत करने एवं निवेश करने में सुविधा मिलती है। यह सब करने से यह भी सुनिश्चित होगा कि आपके पास सफर के लिए पर्याप्त पैसा जुड़ सके। साथ ही, यात्रा की लागत को कम करने के लिए योजना पहले से बनाएं और सीधे आधिकारिक वेबसाइटों के माध्यम से होटल और यात्रा की टिकट बुक करें। सोलो ट्रिप के लिए, आप हॉस्टल/डॉर्मिटरी की तलाश कर सकते हैं। आप thehosteller, hostelworld, इत्यादि वेबसाइटें भी देख सकते है। इस प्रकार रहने के खर्च पर बचत कर सकते हैं। आपके घूमने से देश की अर्थव्यवस्था में भी सुधार होता है। स्थानीय लोगों की पर्यटन के माध्यम से मदद करें।

जो भी हो, आप अपने आरामदायक बिस्तर से बाहर निकलें और अपने आप की खोज शुरू करें। बहुत सारी तस्वीरें लें, उन्हें दुनिया के साथ साझा करें। जितने ज्यादा लोगों से मिलेंगे उतना आपका जिंदगी को लेके नजरिया साफ होगा। खुद को ढूँढने निकले... क्या पता सेवा-निवर्त्ति के बाद वो खुद को ढूँढने वाले पल आपके चहरे पर मुस्कान ले आए। अपनी वृदवस्था में अपने नाती-पोतों को बताने के लिए कुछ शानदार यादें ही साथ बन जाए। भागदौड़ वाली इस जिंदगी का समय उड़ता सा जा रहा है... और सबसे अच्छी बात यह है कि आप इसको चलाने वाले पायलट हैं। तो अपने समय का सही उपयोग करें एवं देश दुनिया घूमे। खुद भी प्रेरित हो और दूसरों को भी प्रेरित करें।

।। अतुल्य भारत, समृद्ध भारत ।।

***

हिंदी संसदीय समिति के फोटो

थोड़ा थोड़ा करके, दिन दिन कर के जो आपके लिए बना है वो आपको ढूंढ ही लेगा

हिंदी संसदीय समिति के फोटो

मोती कभी भी किनारे पे खुद नहीं आते, उन्हें पाने के लिए समुन्दर में उतरना ही पड़ता है।

कायदे, कानून और नियमों से ज्येष्ठ और श्रेष्ठ हैः निश्चल, निष्काम और शाश्वत प्रेम

सुभाषचंद्र गुप्ता

एक बार एक संत ने अपने शिष्यों के साथ एक तीर्थ यात्रा पर चलने का आदेश दिया, सभी शिष्य तीर्थ यात्रा की तैयारी में लग गये, गुरू ने अपने शिष्यों को बताया कि हमें अपने गन्तव्य तक उपवास रखेंगे, इससे हमारा मन, आत्मा और शरीर पवित्र हो जाएंगें।

सभी शिष्यों ने गुरू के आदेश को सहर्ष स्वीकार किया और तीर्थ यात्रा का शुभारम्भ किया, गुरू-शिष्यों के उपवास के अभी तीन दिन ही बीते थे, कि ये लोग एक गाँव में पहुँचे, गाँव-वासियों में एक बहुत ही गरीब आदमी था, जो संत का अनुयायी था, वह उनके आगमन से बहुत खुश था, वह चाहता था कि संत उनके यहाँ ठहरें और भोजन आदि सब ग्रहण करें, उसे यह जानकारी नहीं थी कि गुरू के साथ कितने लोग हैं। अंतः जब उसको जानकारी मिली कि उनके साथ उनकी शिष्य मंडली है। अनुयायी ने संतों को भोजन कराने के लिए अपना खेत और जमीन बेच दी, अतिथि देवोः भवः की उक्ति को चरितार्थ किया।

संत गरीब आदमी के आथित्य, सत्कार की भावना को देख रहे थे, जिसने अपने गुरू का स्वागत करने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया था। संत अपने भक्त की समर्पित भावना के सामने अपने उपवास को भूल गये, वे यह नहीं कह सके कि में और मेरे शिष्य उपवास से हैं, वे आराम से भोजन करने बैठ गये। गुरू के जो शिष्य थे वे इस अनुशासनहीनता पर बहुत क्रोधित थे मगर वे सब चुप रहे, वे भी तीन दिन से भूखे थे, भोजन स्वादिष्ट था, मगर वे गुरू की अनुशासनहीनता पर क्षुब्ध थे।

शिष्यों ने गुरू से पूछा, गुरू देव! क्या आप यह भूल गये थे कि हम उपवास पर हैं। संत ने कहा नहीं, मुझे ठीक से याद था कि हम उपवास पर हैं पर शिष्य का निश्छल, निष्काम और शाश्वत प्रेम ने हमारे मुख पर ताला लगा दिया । अगर हम भोजन नहीं करते तो उस भक्त का दिल टूट इस उपवास से कहीं ज्येष्ठ और श्रेष्ठ था उसका निष्काम, निश्चल और शास्वत प्रेम जिसे सीमा में नहीं बांधा जा सकता। इस अनमोल आतिथ्य सत्कार की सीमा अपार है, जिससे बहुत से कायदे कानून और अनुशासन आते हैं, हम उस गरीब की अपार श्रद्धा को कैसे ठुकरा सकते थे।

शिष्यों ने कहा हमने जो प्रतिज्ञा की है उसका पालन करना चाहिए। संत ने कहा हम लोग आज में जी रहें हैं अपने अंतःकरण को जगाये रखना आवश्यक है, इसको काया, कानून और नियम में मत भेदो । समय, स्थिति और परिस्थिति अपने में महत्वपूर्ण है, उनके अनुसार परिवर्तन आवश्यक है, हम खुद के मालिक हैं, हमने जो प्रतिज्ञा की है उसे तोड़ भी सकते हैं। जो आज स्थिति थी, हमने जो किया, वह सही था। हमारे व्रत से शिष्य आतिथ्य का अपार प्रेम और श्रद्धा अतुलनीय व वंदनीय है। भोजन अहम नहीं था, अहम था उसका निष्काम, निश्चल और शाश्वत प्रेम।

***

हिमाचल प्रदेश के लोक-गीत

राजेश शर्मा
अधीक्षक

हिमाचल प्रदेश के लोक गीत बहुत मधुर और आनंददायक हैं। इन लोक-गीतों का विषय सामान्य जीवन से लेकर इतिहास, धर्म, पुराण आदि सभी से संबंधित हो सकता है। परन्तु प्रायः गाए जाने वाले लोक-गीत प्रेम, वीर-गाथाओं, देव-स्तुतियों, ऋतु-प्रभात और सामाजिक बंधनों, सामाजिक उत्सवों आदि से सम्बन्धित होते हैं। हर्ष और वेदना दोनों की अनुभूति होती है। ये लोक-गीत एकल, युगल या सामूहिक रूप से गाए जाने वाले हैं। रचयिता कोई गायन विशेषज्ञ नहीं बल्कि ये किन्हीं सरस ह्रदय से निकली स्वच्छन्द लयात्मक आवाज है। किसी भी उत्सव, त्यौहार या मेले में गाते समय स्थानीय वाद्य यंत्रों का गायन के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

1. बिहाइयां (Bihaiyan): हिमाचल प्रदेश में जन्म तथा विवाह संबंधी लोक गीत अति प्रसिद्ध हैं। जन्म, नामकरण, मुण्डन आदि संस्कारों के समय गाए जाने वाले गीतों को 'बिहाइयां' कहते हैं।

2. सुहाग (Suhag): कन्या के विवाह के समय गाये जाने वाले लोक गीतों को 'सुहाग' कहते हैं।

3. घोड़ी (ghodi): विवाह की रस्म पूरी होने के बाद विदाई गीत गाये जाते हैं, इन रस्मो को कांगड़ा में घोड़ी कहा जाता है। विवाह सम्बन्धी कुछ अन्य गीतों को 'सिठणियां' भी कहते हैं।

4. कुंजू-चंचलो (Kunju-Chanchlo): हिमाचल में श्रृंगार रस के लोकगीतों का भी विशेष महत्त्व है। कुल्लू और कांगड़ा के प्रेम गीत कुंजू-चंचलो (Kunju-Chanchla) हिमाचल में उसी प्रकार से विख्यात हैं, जिस प्रकार हीर-रांझा के प्रेम गीत हैं। ये गीत प्रेम की प्रबल भावनाओं से ओतप्रोत हैं।

5. झुरी गीत (Jhuri Geet): सिरमौर के श्रृंगार रस से भरे झुरी गीत (Jhuri Geet) कोमल भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। झूरी पहाड़ी भाषा के झूर शब्द का स्त्रीलिंग है जिसका अर्थ अनुभव करना होता है। वास्तव में 'झुरी गीत' विरह गीत होते हैं। मण्डी में **"सिराज की दासी"** नामक लोकगीत प्रसिद्ध है जो की एक झुरी गीत है।

6. पिंगा दे गीत (Pinga da Song): सावन के महीने में बिलासपुर में झूलों के गीत गाये जाते हैं तथा घर-घर में झूले डाले जाते हैं। इन झूलों के गीतों, को **"पिंगा दे गीत"** कहा जाता है।

7. छींजे (Chhinje): छींजे हिमाचल का एक प्रसिद्ध ऋतु गीत है। चैत्रमास में वर्षा के आरम्भ होने पर यह गीत मण्डी के घर-घर में गूंज उठते हैं। छींजे चैत्र संक्रान्ति से लेकर मास के अन्त तक गाये जाते हैं।

8. युगल गीत (Couple Song:): गम्भरी, बालो तथा झंज्युटी आदि बिलासपुर के प्रसिद्ध लोक-गीत हैं। ये युवक-युवतियों के मध्य युगल गीत के रूप में गाए जाते है।

9. वीर पुरुषों की गाथा: सिरमौर का **"हार"** और बिलासपुर, कांगड़ा व मंडी का **"झेड़ा"** ऐसे लोक गीत हैं जिनमें वीर पुरुषों की गाथा का गायन किया जाता है।

10. समूह गान (Group song): किन्नौर और लाहौल-स्पीति के अपने लोक-गीत हैं, जिनका अधिकतर रूप समूह गान में ही देखने को मिलता है।

दृढ निश्चय के साथ सुबह बिस्तर से उठो और मन की संतुष्टि से रात को वापिस आओ।

हिमाचल प्रदेश के लोक नृत्यों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- एकल व सामूहिक एकांकी नृत्य में निम्न भाग का 'गिद्धा' और सिरमौर, शिमला व सोलन का 'मुजरा' शामिल किए जा सकते हैं। इस वर्ग के अन्य नृत्य प्रेक्षणी, **"नतरांभ"** और **"चेड़ी"** आदि हैं। इस प्रकार के नृत्य में भाग लेने वाले गोलाकार में बैठ जाते हैं। वे गाना गाते रहते हैं और स्थानीय वाद्य यंत्रों को भी बजाते रहते हैं। बीच में एक व्यक्ति उठ कर नाच आरम्भ करता है, उसके बैठने पर दूसरा नाचना शुरू कर देता है।

सामूहिक नृत्य, हिमाचल प्रदेश के जन-जीवन का प्रमुख अंग है। नृत्य का स्थान घर का आगन या प्रमुख खुला स्थान कोई भी हो सकता है। निम्न भाग के क्षेत्रों में सामूहिक नृत्यों में स्त्रियां अलग और पुरुष अलग भाग लेते हैं परन्तु अन्य क्षेत्रों में वे सब इकट्ठे एक ही मंच पर नाचते हैं।

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोक नृत्य-

1. **नाटी (Naati):** नाटी, हिमाचल के मध्य क्षेत्रों का देश प्रसिद्ध सामूहिक नृत्य है, जिसे शिमला क्षेत्र में **"गी"** या **"माला"** भी कहा जाता है। नाटी में स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े सभी भाग ले सकते हैं। सभी एक-दूसरे का हाथ पकड़कर पैर आगे पीछे रखते हए और गाने की लय के अनुसार शरीर के अन्य अंगों को हिलाते हुए नाचते रहते हैं। बीच में आग जलाई जाती है और उसके चारों ओर नृत्य चलता रहता है। क्षेत्र और अभिनय के लिहाज से नाटी के लुड्डी, ढीली-नाटी, फटी-नाटी, देहरी-नाटी, बुशैहरी-नाटी, बाहड़-नाटी। कड्थी-नाटी, लाहौली, बखैली, खरैत, गड्भी, दयोखल और जोण-नाटी आदि प्रमुख नाटी हैं।

2. **कड़थी (Karthi):** कड़थी, कुल्लू की मशहूर नाटी है, जो चांदनी रात में खरीफ फसल के बाद खुले में आयोजित की जाती है। पहले इसका आरम्भ धीमे-धीमे किया जाता है और पूर्ण गति प्राप्त करने पर स्त्रियां अपना-अपना नृत्य साथी चुनकर नाटी नृत्य करती है।

3. **घुघटी (Ghughti):** यह लोक-नृत्य किशोरों के मध्य क्षेत्रों में लोकप्रिय है। इसमें नर्तक एक दूसरे के पीछे खड़े होते हैं। पीछे वाले आगे वाले के कोट को नीचे से एक किनारे से पकड़ते हैं। टोली का नेता 'घघटी' गीत गाता है और टेढ़े-मेढे तरीके से आगे की ओर झुकता है। शेष उसका अनुसरण करते हैं।

4. **बिड़सु (Birsu): यह शिमला के ऊपरी भाग और सिरमौर के पूर्वी भाग का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह नृत्य प्राय:** मेलों के समय खंडों द्वारा किया जाता है। खंड, खशों की एक बलप्रिय टोली है। जब वे किसी मेले में जाते हैं तो इकट्ठे होकर रास्ते में नाचते हैं। इनके हाथ में तलवारें, डंगरे, लाठी, खुखरी या रूमाल होते हैं। साथ में ढोल और रणसिंगा बजाते चलते हैं। रात के समय नर्तक यह नृत्य करते समय हाथ में मशालें लेते हैं। जब वे मेले में पहुंचते हैं तो थोड़ी देर तक नृत्य करके बिछुड़ जाते हैं। शाम को वापसी पर फिर नृत्य करते हुए आते हैं।

5. **बुड़ाह नृत्य (Burah Dance):** यह सिरमौर में किया जाने वाला प्रसिद्ध लोक-नृत्य है जो दीवाली या अन्य उत्सवों के समय 10-15 आदमियों की टोली द्वारा सामूहिक तौर पर किया जाता है। 4-5 आदमी हुड़की (वाद्य यंत्र) बजाते हैं और शेष डांगरों को हाथ में लिये गीत गाते हुये नाच करते

शुरुआत करने का तरीका है कि आप बात करना छोड़ दें और बस काम करना शुरू करें।

हैं। इन गीतों में वीर-गाथाओं का वर्णन होता है, जिनमें सिद्ध और उसके गढ़ का गीत अधिक लोकप्रिय है। रासा और क्रासा सिरमौर के अन्य प्रसिद्ध लोक-नृत्य हैं, जो नाटी से मिलते-जुलते हैं।

6. **डांगी व डेपक (Dangi or Depak):** ये चम्बा के छतराड़ी इलाके के लोक-नृत्य हैं। डांगी नाच गद्दी औरतों का सामूहिक नृत्य है, जो **"जातरा"** या मेलों में किया जाता है। डेपक नृत्य तब किया जाता है, जब गद्दी अपनी भेड़-बकरियां लेकर कांगड़ा की ओर चलते हैं।

7. **पांगी का फुल-यात्रा नृत्य:** यह नृत्य पांगी की औरतों द्वारा पहला हिमपात होने से पूर्व किया जाता है। नृत्य 'घरेई' चाल से आरम्भ होता है, जबकि नर्तक एक दूसरे को काटती हुई पंक्तियों में नृत्य-स्थान में प्रवेश करते हैं और उसके बाद हाथ पकड़ कर गोलाकार में नाचना शुरू करते हैं। घुटनों को झुकाते हुये एक कदम आगे और पीछे लिया जाता हैं। किन्नौर को किन्नरों की भूमि होने के कारण नृत्यों का घर ही कहा जाता है। यहां के नृत्यों में बौद्ध और हिन्द दोनों का समावेश हुआ है।

8. **कायांग (Kyang):** यह किन्नौर का प्रसिद्ध लोक नृत्य हैं। इसमें मर्द और औरतें अर्द्ध-वृत्त बनाते हैं और बाजको (यंत्र बजाने वाले) मध्य में खड़े होते हैं। पुरुषों की टोली का एक वृद्ध परुष और स्त्रियों की टोली की एक वृद्ध स्त्री नेतृत्व करती हैं और वाद्य द्वारा निश्चित की गई धुनि के अनुसार कदमों की चाल रखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने से तीसरे का हाथ पकड़ता है। टोली का नेता हो-हो की आवाज पर सारे आगे को आधा झुकते हैं टोली के दो आदमी लोक-गीत गाते हैं, जिनका शेष सभी अनुसरण करते है।

9. **बाक्यांग (Bakayang):** यह किन्नौर का दूसरी किस्म का नृत्य है जिसमें नर्तक एक दूसरे के सामने दो या तोन पंक्तियां बनाते हैं। एक पंक्ति के नर्तक लयात्मक तरीके से नाचते हुए पीछे हटते हैं और सामने की पंक्ति के आगे आते हैं। बारी-बारी यह क्रम दोहराया जाता है। यह नृत्य आमतौर पर स्त्रियों द्वारा किया जाता है।

10. **बानांचयु (Banyangchu):** यह किन्नौर का तीसरे प्रकार का नृत्य है, जो पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसमें स्वतंत्र रूप से कदम चलाये जाते हैं। नर्तक बाजकियों के चारों ओर गोलकार में नाचते हैं। औरतें गीत गाती हैं। किन्नौर के अन्य नृत्य पनास, चम्पा, चामिक, रवार, डेयांग व जोगसन आदि हैं।

11. **दानव-नृत्य (Devil Dance):** यह लाहौल-स्पीति व ऊपरी किन्नौर में लामाओं द्वारा विशेष अवसरों पर गुफाओं में किया जाने वाला नृत्य है। लोसर (नव-वर्ष), दाछांग, **"थोंग-थोंग"** और **"नमगान"** आदि उत्सवों पर लामा गुफाओं के आंगन में **"वाग"** (मुखौटे) पहन कर यह नृत्य करते हैं। इसमें वाद्य-यंत्र बजाने वाले भी लामा ही होते हैं। यह नृत्य देवताओं की दानवों पर विजय को दर्शाता है।

1729: एक जादुई संख्या!

सूरज धीमान
प्र.श्रे.लि

" विश्व को गणित की प्रत्येक विधा में योगदान देने के लिए आज भी विश्व भारत का ऋणी है |" गणित दिवस के दिन हम देश को यही संदेश दे और गणित की अपनी प्रतिभा से पूरे विश्व को अपना लोहा मनवाएं, यही हमारा संकल्प भी हो ।

राष्ट्रीय गणित दिवस भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है | "भारत के 14 वें तथा तात्कालिक प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने 26 फरवरी 2012 को मद्रास विश्वविद्यालय में भारतीय गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन के जन्म की 125 वीं वर्षगांठ के, समारोह के, उद्घाटन के दौरान 22 दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस मनाए जाने की घोषणा की, तथा यह भी कहा कि 2012 को राष्ट्रीय गणित वर्ष के रूप में मनाया जाएगा |" तब से हर वर्ष भारत में राष्ट्रीय गणित दिवस स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में कई शैक्षिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है | इस दिन आंध्र प्रदेश के चित्तूर में ' कुप्पम ' में रामानुजन के मठ पार्क के खुलने से इस दिन का महत्व और ज्यादा बढ़ गया है।

रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर 1887 को भारत के दक्षिणी भूभाग में स्थित कोयम्बटूर के ईरोड नाम के गांव में हुआ था। इनको गणित में कोई विशेष परीक्षण नहीं मिला था , इसके बावजूद उन्होने अपनी प्रतिभा तथा लग्न से ना केवल गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया, अपितु भारत को वैश्विक स्तर पर गौरव प्रदान कराने का भी काम किया| रामानुजन ने दस वर्ष की आयु में प्राइमरी परीक्षा में पूरे जिले में सबसे अधिक अंक प्राप्त किए और आगे की शिक्षा के लिए टाउन हाईस्कूल पहुंचे। रामानुजन को प्रश्न पूछना बहुत पसंद था। उनके प्रश्न अध्यापकों को कभी-कभी बहुत अटपटे लगते थे। जैसे कि-संसार में पहला पुरुष कौन था? पृथ्वी और बादलों के बीच की दूरी कितनी होती है? रामानुजन का व्यवहार बड़ा ही मधुर था। इनका सामान्य से कुछ अधिक स्थूल शरीर और जिज्ञासा से चमकती आखें इन्हें एक अलग ही पहचान देती थीं। इनके सहपाठियों के अनुसार इनका व्यवहार इतना सौम्य था कि कोई इनसे नाराज हो ही नहीं सकता था। विद्यालय में इनकी प्रतिभा ने दूसरे विद्यार्थियों और शिक्षकों पर छाप छोड़ना आरंभ कर दिया। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इन्हें गणित और अंग्रेजी मे अच्छे अंक लाने के कारण सुब्रमण्यम छात्रवृत्ति मिली और आगे कालेज की शिक्षा के लिए प्रवेश भी मिला। इनकी प्रतिभा का पता इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब वह कक्षा सात में अध्ययन करते थे , तो उसी समय बी०ए० के छात्रों को भी गणित पढ़ाते थे। वह गणित के किसी भी प्रश्न को सबसे अधिक तरीके से हल कर सकते थे। 16 वर्ष की आयु में इन्होंने देश के महान गणितज्ञ में से एक "जी०एस०सी०सी०" द्वारा लिखी गई A synopsis of elementary result in pure and applied mathematics में लिखी गई 5000 में से ज्यादा प्रमेयों को सिद्ध करके अपनी प्रमाणिकता को सुनिश्चित किया था।

रामानुजन ने 5 वर्षों तक इंग्लैंड में संख्या सिद्धांत पर कार्य किया था । जिसके बाद इन्होंने गणित के दो सबसे महत्वपूर्ण नियम को 'पाई' तथा 'ई' के मध्य संबंध एक अनंत सतत भिन्न के माध्यम से स्थापित किया था। इन्होंने ऐसी प्राकृतिक संख्याओं की भी खोज की थी जिनको दो अलग-अलग प्रकार से दो संख्याओं के घनों के योग के द्वारा स्थापित किया जा सकता है | इनको रामानुजन नंबर से जाना जाता है |

उदाहरण - { 9^{3}+10^{3} = 1^{3}+12^{3}=1729}.

इनके द्वारा गणित के क्षेत्र में ऐसे ही अनेक महान कार्य किए गए थे, जिनकी वजह से इनका नाम मानव इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित किया गया है।

***

जिंदगी

प्रदीप
आशुलिपिक

कोई पूछे अगर कि
क्या है जिंदगी तो
जिंदगी तो है इक जादू,
जिसको मुश्किल करना है काबू।
जिंदगी तो है वो खूबसूरत ख्वाब,
जिसके असलियत से देने पड़ते हैं जवाब।
किसी के लिए हंसी-खुशी,
तो किसी के लिए गम है जिंदगी।
मेरे लिए अलग और तेरे लिए अलग है जिंदगी,
पर जैसी भी है काटनी तो पड़ती है जिंदगी।

***

कामकाजी महिला की विडंबना

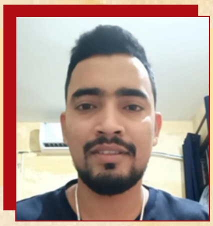

अमन कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर लिखते समय उनकी घरेलू जिंदगी भी इसके अंदर समाहित हो जाती है खासकर जब वह एक मध्य या निम्न वर्ग की हो। उनकी स्थिति दो नावों में सवार व्यक्ति के समान होती है क्योंकि एक ओर उसे कार्यालय में तनाव के नीचे कार्य करना होता है दूसरा स्त्री होने के कारण अधिकारी वर्ग (जरूरी नहीं अधिकारी पुरूष ही हो या यह स्थिति हर जगह हो) उसे दबाने की कोशिश में लगा रहता है। चाहे वो कितनी ही योग्य क्यों न हो उसकी गलती निकालने में अपना पुरूषत्व सार्थक समझा जाता है।

शुरूआत से ही देख लीजिए कभी भी किसी लड़के से ऐसा नहीं पूछा जाता है कि वह शादी के बाद नौकरी करेगा या नहीं लेकिन लड़कियों से यह सवाल पक्का पूछा जाता है कि वह शादी के बाद नौकरी करेगी या नहीं, फैमिली प्लानिंग के बारे में कुछ सोचा है या नहीं। इसमें कोई शक नहीं है कि एक लड़की के लिए नौकरी करना मर्दों के मुकाबले ज्यादा मुश्किल है।

उन्हें कार्यस्थल से लेकर घर तक ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं जिनका दर्द वो चाहकर भी बयां नहीं कर सकती। कार्यालय में इतना समय बिताने के कारण उसकी घरेलू जिंदगी में भी अस्त-व्यस्तता आती है। उसे खाना बनाने, बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करने, टिफिन तैयार करने और सफाई आदि के लिए सुबह जल्दी उठना पड़ता है। इन सब कामों को निपटाकर वह कार्यालय जाने के लिए तैयार होती है। पश्चिमी देशों की तरह भारत में घरेलू कार्यों के लिए पुरूष स्त्रियों का हाथ उतना नहीं बँटाते हैं। कार्यालय से थकी-माँदी लौटने पर उसे बच्चों, पति की आवश्यकताओं को देखना पड़ता है। इतना सब करने के बाद भी सदैव खुश दिखाई देना ही भारतीय कामकाजी महिला की नियति है।

पुरूषों के लिए यह एक आम बात होगी लेकिन एक महिला के लिए बहुत बड़ी बात है। इसलिए ये सहकर्मियों का दायित्व है कि जब भी कोई महिला असहज दिखे तो स्थिति को भांपकर उसकी मदद करें।

कुछ बातें जितनी कड़वी होती हैं उतनी ही असरदार भी जैसे कार्यस्थल में महिलाओं को एक और चीज़ परेशान करती है जिसे आजकल के युवा **"कैट फाईट"** कहते हैं जोकि महिला सशक्तिकरण की बुनियाद को हिला देती है। शायद सभी स्त्रियां मेरी इस बात से सहमत हों। यह एक बीमारी ही है जो कि महिलाओं की एकता को तोड़ती है और उन्हें मानसिक तौर पर परेशान भी करती है।

अंत में मैं अपनी लिखनी को विराम देते हुए बस इतना ही कहना चाहता हूं कि हमें जहां तक संभव हो सके एक **"वुमन फ्रेंडली"** परिवेश बनाने में भागीदार बनना चाहिए क्योंकि महिलाएं हैं तो हम हैं, हम हैं तो सबकुछ।

"रानी ने राजा को मारा, अब बराबर की टक्कर है,

प्यादों को तो लगता है, ये #मी_टू का चक्कर है।

***

अगर आप बुरी स्थिति में भी अपने आप को सकारात्मक रखते हैं तो यह आपकी जीत है।

बस्ते का बढ़ता बोझ

विकास कुमार
सहायक

विद्या के संबंध में कहा जाता है कि " **सा विद्या या विमुक्तये**" अर्थात विद्या वही है हमें मुक्ति दिलाए। वर्तमान समय में बस्ते का बोझ इतना बढ़ गया है कि छात्रों को मिलने वाली विद्या का साधन ही उसे दबाए जा रहा है। आज का छात्र, छात्र कम और कुली ज्यादा दिखने लगा है।

पुस्तकें ज्ञान प्राप्त करने का साधन होती है। पुस्तकों के कारण शिक्षा प्रणाली आसान बन सकी है। प्राचीन काल में जब पुस्तकों का अभाव था तब रट्टा मारकर ही ज्ञान प्राप्त होता था। तब गुरूजी ने एक बार जो बता दिया उसे बहुत ध्यान से सुनना, समझना और दोहराना पड़ता था क्योंकि तब आज की तरह पुस्तकें न थी ।

प्रतियोगिता और दिखावे के इस युग में माता-पिता अपने बच्चों को जल्दी से जल्दी स्कूल भेज देना चाहते हैं अब तो प्ले स्कूल के पाठ्यक्रम की छोड़ के तो नर्सरी कक्षा से ही पुस्तकों की संख्या विष्यानुसार बढ़ने लगती हैं। पहली कक्षा से ही कम्प्यूटर और सामान्य ज्ञान की पुस्तकें भी पाठ्यक्रम में लगवा दी जाती हैं। अभिभावक समझता है कि उसका बच्चा पहली कक्षा से ही कम्प्यूटर पढ़ने लगा है। पर इन पुस्तकों के कारण बस्ते के बोझ को नजर अंदाज कर जाते हैं।

भारी-भरकम बस्ता उठाए विद्यालय जाते छात्रों देखना तो अच्छा लगता है पर इस वजन को उठाते हुए उनकी कमर झुक जाती है इससे कम उम्र में ही उन्हें रीढ़ की हड्डी में दर्द रहने की समस्या शुरू हो जाती है। शहरी खान-पान में फास्ट फूड की अधिकता बढ़ रही है जिससे सीधा असर बच्चों के स्वास्थय पर पड़ता है और अल्पायु में ही चश्मा लग जाता है।

बसते का बोझ बढ़ने के कारण अभिभावक भारी-भरकम बस्ते को देख कर खुश होते हैं कि उनका बच्चा अन्य बच्चों की तुलना में ज्यादा पढ़ रहा है और प्राइवेट स्कूल के प्रबंधकों का लालची प्रवृति । वे पाठ्यक्रम में अधिक से अधिक पुसतकें शामिल करवा देते हैं ताकि अभिभावरों से अधिक से अधिक धन वसूल कर सकें।

इस बोझ को कम करने के लिए अभिभावकों को अपनी सोच में बदलाव लाना होगा कि भारी बस्ते से ही अच्छी पढ़ाई नहीं होती है इसके अलावा शिक्षण संस्थानों में प्रोजेक्टर आदि के माध्यम से पढ़ाने की व्यवस्था हो ताकि पुस्तकों की जरूरत कम से कम पड़े। दिन में दो या तीन विषय ही पढ़ाए जाए ताकि छात्रों को कम से कम पुस्तकें लानी पड़े।

बस्ते का बढ़ा बोझ बच्चों का बचपन ही नहीं निगल रहा बल्कि उन्हें शारीरिक रूप से विकृत भी बना रहा है। शिक्षाविदों को अपनी राय सरकार तक तुरंत पहुंचानी चाहिए।

***

बेशक हर दिन अच्छा नहीं होता, लेकिन हर दिन कुछ ना कुछ अच्छा जरूर होता है।

विविध तस्वीरे

दूसरों की छोटी छोटी मदद करते रहिए. कई बार यह छोटी-छोटी मदद दूसरों के दिल में बड़ी जगह बना लेती हैं।

विविध तस्वीरे

जब हम बैठते हैं तो हम डर पैदा करते हैं, जब हम कार्य करते हैं तो हम इसे दूर कर लेते हैं.

जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता

दुखमोचन गोपाल
अधीक्षक

संयुक्त राष्ट्र विश्व जनसंख्या रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान समय में विश्व की आबादी जुलाई 2022 में लगभग 7.96 अरब थी जो इस वर्ष 15 नवंबर को 8 अरब से अधिक हो जाएगी। जबकि वर्ष 1804 में दुनियां की आबादी सिर्फ एक अरब थी। अर्थात सिर्फ 215 साल की अवधि में बढ़कर आठ गुणी हो चुकी है। भारत देश के संदर्भ में ध्यान देने पर पता चलता है कि आज से सिर्फ 75 साल पहले स्वतंत्रता प्राप्ति के समय महज 36 करोड़ की आबादी वाला भारत तीन गुणा से भी अदिक बड़कर 130 करोड़ पार कर चुका है। पूरे विश्व के धरातल क्षेत्रफल के सिर्फ 2.4% हिस्सा पर 1/6 आबादी निर्भर है। गौरतलब है कि वैश्विक आबादी का 215 वर्षों की अवधि में 100 करोड़ का ईजाफा विस्फोटक स्थिति की तरफ सहज ही ईशारा करता है। जबकि प्राकृतिक संसाधन सीमित है और आगामी दुष्प्रभावों की चिंता किए बगैर इसका अंधाधुंध दोहन बदस्तूर जारी है।

तीव्र गति से बढ़ रहे वैश्विक आबादी के कारणों पर गौर करें तो हम देखते हैं कि 18वीं सदी से पूर्व संसार के लगभग सभी हिस्से में राजशाही शासन व्यवस्था थी जिनके बीच वर्चस्व की लड़ाई में अक्सर युद्ध होते रहते थे। इसके परिणामस्वरूप जान-माल की अपूरणीय क्षति होती थी। इसके अलावे बाढ़, भूकंप, महामारी, अकाल इत्यादि जैसे प्राकृतिक आपदाओं के कारण भी आबादी बढ़ना नियंत्रित होता था। धीरे-धीरे जीवन शैली में आए सुविधाजनक बदलाव एवं वैज्ञानिक व तकनिकी प्रगति विशेषकर चिकित्सा जगत के अनुसंधानों ने जीवन प्रत्याशा में बढ़ोत्तरी कर दी। मानव जन्म दर औऱ मृत्यु दर के मध्य अंतर दिनेंदिन बढ़ता गया। भारत जैसे विकासशील देश के उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर जनसंख्या का अत्यधिक बोझ विकराल रूप ले चुका है जिसके प्रति आगाह होकर 1952 ईस्वी में इसके नियंत्रण हेतु सरकार ने राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया था किंतु प्रभावी क्रियान्वयन न हो पाने की वजह से उम्मीद के अनुसार परिणाम नहीं मिल पाया।

वैश्विक परिदृश्य में भी आबादी में बेतहाशा वृद्धि मूलतः सभी जटिल समस्याओं (मसलन अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, पिछड़ापन, कुपोषण इत्यादि) का स्त्रोत है। जबकि विकसित देश आबादी के कम बोझ के कारण इन समस्याओं से निपटने में आसानी से कामयाब होते हैं वही अविकसित देश इस दुश्चक्र से कभी नहीं निकल पाते हैं। इसी वजह से गरीब देशों की बड़ी आबादी आज भी भुखमरी का अभिशाप झेलने को विवश है। बेशक् कृषि क्षेत्र में भी उत्पादन क्षमता में काफी इजाफा देखने को मिला है किन्तु निश्चित है कि समय रहते अगर इस और गंभीरता पूर्वक ध्यान देते हुए माकूल प्रयास नहीं किया गया तो दिनों-दिन स्थिति भयावह होती जाएगी और हम सब आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित भविष्य एवं स्वच्छ पर्यावरण देने में असफल होंगे।

सीमित संसाधनों के विवेकपूर्ण दोहन एवं खाद्यान सुरक्षा को सुनिश्चित किए बिना हम पूरी मानव जाति को भुखमरी के दंश से बचाने में सफल नहीं हो पाएंगे। मतलब स्पष्ट है कि वर्तमान समस्याओं का निवारण करते हुए आने वाली पीढ़ी के लिए एक सुरक्षित पर्यावरण और उज्जवल भविष्य देना सर्वोच्च प्राथमिकता होना चाहिए। इसके साथ ही अन्न की बर्बादी (जिसमें साबुत अनाज एवं पके भोजन की खपत शामिल है) रोकने के सभी संभव उपाय अपनाने होंगे। क्योंकि अनाज के भंडारण की उन्नत व्यवस्था और पके भोजन के सदुपयोग के बिना यह मुश्किल है। फूड पैकेजिंग भी इसमें अहम भूमिका निभाता है। जाहिर सी बात है कि सरकार के सख्त दिशा-निर्देश और जन जागरूकता सहभागिता के बगैर हम इस मुहिम में सफल नहीं हो सकते और इसका खामियाजा सबको भुगतना पड़ेगा।

वर्तमान युग नवाचार, कौशल के साथ एडवांस तकनीकी को समर्पित है। ऐसे में बदलाव को अपनाए बिना " योग्यतम की उत्तरजीविता" के सिद्धांत पर कायम रहना असंभव है। विकास की धारा निर्बाध और परिवर्तन समावेशी होने के साथ ही आने वाले समय के लिए दुष्परिणाम रहित होना अनिवार्य हो इसी में सबकी भलाई है। विश्व के समृद्धि और कल्याण का मूल मंत्र बृहदारण्यक उपनिषद में इस प्रकार है। "सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामय। सर्वे भद्रानि पश्यन्तुः मा कश्चिद दुखभाग्भवेत।।" अर्थात सभी जीव सुखी होवें, सभी जीव निरोगी रहें, सभी जीवों का कल्याण हो और किसी भी जीव को दुख का भागी न बनना पड़े। इस पवित्र भाव को आत्मसात किए बिना समूचे विश्व का कल्याण नहीं हो सकता। किसी भी सरकार का प्रमुख दायित्व अपने नागरिकों को सुरक्षित और समृद्ध जीवन यापन के लिए समुचित ढांचागत व्यवस्था उपलब्ध कराना होता है। इसके लिए जनसंख्या नियंत्रण और शिक्षा का प्रसार सर्वप्रथम अनिवार्य शर्त है जिसके बिना इस उद्देश्य की प्राप्ति असंभव है। निश्चय ही यह भी सबको मानना होगा कि जन जागरूकता और जन-सहभागिता के अतिरिक्त शासन व्यवस्था के सभी घटकों का भरपूर योगदान को आंदोलन के रूप में चलाना होगा। सभी सुधी पाठकों को आग्रह है कि इस दुष्प्रभाव को जन्म देने वाली वैश्विक आबादी की विस्फोटक स्थिति को विनाशकारी होने से पूर्व हमें संसाधनों के विवेकपूर्ण दोहन एवं खाद्यान सुरक्षा के पुनीत कार्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान अवश्य दें।

***

जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास होता है वह दूसरों का भी विश्वास हासिल करता है

संसदीय समिति निरीक्षण प्रश्नावली मे उल्लेखित राजभाषा अधिनियम/ नियम तथा राजभाषा नीति संबंधी सरकारी आदेशो से किए गए संगत (निर्धारित जाँच बिंदु)

क्र.सं.	मद	उत्तरदायी अधिकारी
1	राज्यभाषा अधिनियम की धारा 3(3)के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज़ जैसे परिपत्र, आदेश आदि को अनिवारी रूप से द्विभाषी रूप में जारी करना	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी / शाखा
2	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी / शाखा
3	लिफाफों पर पतें हिन्दी में लिखना	सभी शाखाधिकारी / जारीकर्ता अधिकारी तथा प्राप्ति एवं प्रेषण शाखा के अधिकारी
4	सभी पत्रशीर्ष द्विभाषी रूप में तैयार / प्रयोग करना	सभी शाखाधिकारी / हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी
5	रेजिस्टरों एवं सेवा पुस्तिकाओं/ सेवा अभिलेखो के शीर्ष द्विभाषी होना तथा उनमें प्रविष्टियों हिन्दी में किया जाना	प्रशासन शाखा के अधिकारी / लेखा अधिकारी
6	रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, साइन बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में बनाना	सामान्य / संबन्धित शाखा के अधिकारी

क्र.सं.	मद	उत्तरदायी अधिकारी
7	क तथा ख क्षेत्रों की राज्य सरकारों को भेजें जाने वाले पत्र आदि अनिवार्यतः हिंदी मे जारी करना	सभी शाखाधिकारी / हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी
8	द्विभाषी कम्प्यूटरों / इलेक्ट्रॉनिक्स की खरीद / व्यवस्था	सामान्य शाखा के अधिकारी / खरीद अधिकारी
9	हिन्दी में प्राप्त आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर अनिवार्यतः हिन्दी भाषा में दिया जाना	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी / शाखा
10	सभी विभागीय बैठको की कार्यसूची तथा कार्यवृत अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में जारी करना तथा बैठक की कार्यवाहियाँ हिन्दी भाषा में संचालित करना	बैठक के अध्यक्ष / संबन्धित शाखा के अधिकारी / हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी / शाखाएँ
11	राज्यभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों द्वारा हिंदी मे कार्य निष्पादन	राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, सदस्य सचिव तथा सभी सदस्य
12	सभी कम्प्यूटरों मे यूनिकोड सहित हिंदी का उपयुक्त सॉफ्टवेर उपलब्ध कराना तथा ई-मेल हिन्दी में किया जाना	प्रणाली शाखा का अधिकारी तथा सभी ई-मेल जारीकर्ता अधिकारी / शाखाएँ
13	इकाई (कार्यलाय / अस्पताल) द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले मुद्रित / साइक्लोस्टाइल फॉर्म एवं मानक मसौदे को द्विभाषी रूप में ही मुद्रित तथा प्रकाशित करवाया जाना	सामान्य शाखा के अधिकारी / संबंध्त प्रयोगकर्ता अधिकारी / शाखा अधिकारी
14	विज्ञापन पर खर्च की जाने वाली कुल राशि में से न्यूनतम 50% राशि का व्यय अनिवार्यतः हिन्दी विज्ञापनो पर किया जाना	सामान्य / जनसंपर्क अधिकारी
15	वेबसाइट का द्विभाषीकरण तथा वेबसाइट पर सामाग्री (पत्र-व्यवहार आदि) द्विभाषी रूप में ही अपलोड किया जाना	वेबसाइट सामार्गीप्रबमधक तथा पत्र आदि जारीकर्ता अधिकारी / संबंधित शाखा
16	अनुपालन के संबंध में प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व (राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के उपबंधों तथा केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए निर्देशों का समुचित रूप मे अनुपालन सुनिश्चित करना / करवाना)	ईकाई (कार्यालय / अस्पताल) अध्यक्ष
17	सम्पूर्ण करी हिन्दी में करने के लिए विनिर्दिष्ट शाखाओं में अनुपालन	विनिर्दिष्ट शाखओ के अधिकारी / विनिर्दिष्ट शाखाएँ
18	उपस्थिती पंजिका में कार्मिकों के नाम तथा हस्ताक्षर हिन्दी में होना	सभी शाखा अधिकारी / सभी कार्मिक

मैं हिमाचल प्रदेश हूं

नरैण सिंह
सहायक

मैं हिमाचल प्रदेश हूँ
नदियाँ पहाड़ हैं शान मेरी
मैं हरा भरा सा एक प्रदेश हूँ
देवभूमि सब कहते मुझे
मैं हिमाचल प्रदेश हूँ ।

खो रही अब पहचान मेरी
कटते पेड़ ले रहे जान मेरी
अब चंद वर्षों का बचा खेल हूँ
मैं हिमाचल प्रदेश हूँ ।

ये जो नोंच-नोंच मुझे खा रहे
यो सब इंसान कातिल मेरे
इनकी महत्वाकांक्षा की चढ़ती भेंट हूँ
मैं हिमाचल प्रदेश हूँ ।

कहीं मेरे पहाड़ों को काट रहे
कहीं मेरी नदियों को बांट रहे
अब बन रहा मैं बंजर खेत हूँ
मैं हिमाचल प्रदेश हूँ ।

अपनी बदहाली पर रो रहा हूँ मैं
तुम इंसानों की ख्वाहिशें ढ़ो रहा हूँ
मेरे नदियां – नाले सब सूख रहे हैं
पल-पल मुझे सब कोस रहे हैं।

अब तो रूक जाओ मैं कह रहा हूँ
बख्श दो मुझको कब से सह रहा हूँ
अब बचा लो मुझे जितना बचा शेष हूँ
मैं तुम्हारा अपना हिमाचल प्रदेश हूँ ।

***

आपको या तो अनुशासन चुनना होगा या फिर पछतावे का अनुभव, चुनना आपको है।

जिंदगी

मनुज ठाकुर

पग-पग बढ़ती, कभी न रुकती , कभी न मुड़ती ।

ऐ जिंदगी... कुछ देर तो ठहर,

कुछ अपने पीछे छूट गए, कुछ सपने प्यारे टूट गए,

कुछ रुठों को मनाना बाकी है, कुछ सपनों को सजाना बाकी है ।.....

पर ये हठी कहाँ मानने वाली,

निरंतर अपनी चाल से चलती रही,

छूटे अपने; याद बन गए,

पुराने दोस्त बात बन गए,

मैने गुजारिश की, कुछ लम्हों को कैद कर लूँ, कुछ यादों को समेट लूँ

गुलशन ये जो गुलज़ार बना पड़ा है, इन लम्हें को फिलहाल मैं जी लूँ........

पर समय की धारा मुट्ठी में से रेत समान फिसल कर निकल गई,

हमारे देखते ही देखते खाली मुट्ठी ही रह गई.......

जानती हूँ आगे बढ़ना ही जीवन है ,

मानती हूँ ऐसा पल भी आएगा,

रोज़ सुबह-शाम मिलने वाले दोस्तों को देखे, अरसा बीत जाएगा...

बातें यादें बन जाएँगीं ।

बीती बातें याद कर के ..कभी यूँ ही हँस लेंगें , कभी सहसा ही आँसू बह लेंगे ।

कभी समय पर रुठे दोस्तों को न मनाने का मलाल होगा और

जब कभी मिल बैठेगें मित्र पुराने, कभी किसी बहाने तो यह दिल खुशहाल होगा ।

***

जल

पप्पु कुमार
सहायक

जल है तो जीवन है, जल है तो हम हैं।

जल है तो संसार है, जल से ही हर्ष अपार है।

जल है तो हम हैं, जल से ही कल है।

जल है तो नदियां है, जल से ही "खेत खलिहान है"

जल है तो जीवन है, जल है तो हम हैं।

जल से ही पुष्प हैं, जल से ही पवित्रता है।

जल से बना मानव तन है, जल से ही हरियाली वन है।

जल से ही है सागर गहरा, जल ही पर्वत पर हिम बनकर ठहरा।

जल है तो जीवन है, जल है तो हम हैं।।

***

जिंदगी

रजनी
सहायक

छोटी सी है जिंदगी, हर पल में खुश रहो।

जो चेहरा पास नहीं है, उसकी आवाज में खुश रहो।

कोई नाराज है, उसके अंदाज में खुश रहो।

जो समय बीत चूका है, उसकी मीठी याद में खुश रहो।

कल किसने देखा है, अपने आज में खुश रहो।

हँसता हुआ बीत रहा है पल, आने वाले कल के लिए खुश रहो।

छोटी सी है जिंदगी, हर पल में खुश रहो।

***

घर से दूर

आशीष
अवर श्रेणी लिपिक

दीवाली गयी, छुटिटयां गयी, अब परिवार से दूर जाना है

जरुरतों को जीना है, अब वापस काम पे लौट आना है

सुबह के नाश्ते की टेंशन, दोपहर के खाने की टेंशन

रात को थक कर आके, भूखे पेट सो जाना है

जिम्मेदारी निभानी है, जिम्मेदार बन जाना है

दीवाली गयी, छुटिटयां गयी, अब परिवार से दूर जाना है

बैठे बैठे आवाज लगा कर, अब कुछ नहीं मिलने वाला है

सुबह-सुबह कपड़े धो कर, फिर से ऑफिस जाना है

शाम को वापस आते वक्त, राशन भी लाना है

पापा की डांट सुन कर, मम्मी का प्यार मिलता है

अब बॉस की डांट सुन कर, बस खुद में खो जाना है

मैं मर्द हूँ दुनिया को दिखाना है तो बस मुस्कुराना है

दीवाली गयी, छुटिटयां गयी, अब परिवार से दूर जाना है

***

अगर आप को खुद पर ही विश्वास नहीं है तो आप भगवन पर विश्वास नहीं कर सकते।

पापा एक दिन लौट के आना

आशीष
अवर श्रेणी लिपिक

मेरे प्रथम पूज्य पापा को
शत शत नमन मेरा,
जब जीवित थे में था लाड़ला
वो थे घमंड मेरा,
अब साथ तो है पर साथ नहीं
रोता है मन मेरा,
पर दुआ है उनसे मेरी
एक दिन लौट के आना,
अरे इस जन्म नही अगले में
मेरा साथ निभाना,
मेरे साथ ही रहना हरदम फिर ना
छोड़ के जाना,
मेरी दुआ है आपसे पापा
एक दिन लौट के आना।

***

सभी महिलाओं को सादर समर्पित

मुझे भी एक रविवार चाहिए

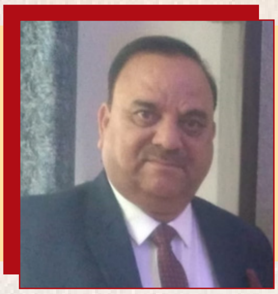

यशपाल भट्टी
कार्यालय अधीक्षक

मुझे भी एक रविवार चाहिए,
साल में बस एक यादो बार चाहिए,
खो रही हूँ कहिं अपने ही भीतर में,
खुद साथ लम्हें बस दो-चार चाहिएं,
मुझे भी एक रविवार चाहिए।

सरपट दौड़ती रोज की सुबह नहीं,
एक दिन मीठी सी भोर चाहिए,
रसोई की चिंता यूं तो कभी जाती नहीं,
पर एक दिन मुझे भी अवकाश चाहिए,
मुझे भी एक रविवार चाहिए।

न कपड़े, न बर्तन, न झाड़ू, न कटका,
न बच्चों का होमवर्क, न पानी का मटका,
एक दिन इनकी न हो कोई फिक्र मुझे,
एक प्याली गर्म चाय बिस्तर पर चाहिए,
मुझे भी एक रविवार चाहिए।

सब बैठे हों जब साथ मैं रसोई में न रहूँ,
बात मन की मैं भी साथ सबके कहूँ,
वो बातें वो ठहाके छुट गए थे कभी,
एक दिन के लिए लौटा दो वो सभी,
मुझे भी एक रविवार चाहिए।

***

खुद को इतना मजबूत बनाओ कि कोई चाह कर भी आपको अपने लक्ष्य से दूर न कर पाए।

राजभाषा पखवाडा 2022

अपनी सोच को सकारात्मक रखोगे तो हर चीज का सामना हो सकता है।

राजभाषा पखवाडा 2022

अपने लक्ष्य की और बढ़ते रहो, जितना तुम सोचते हो, वो उस से कहीं ज्यादा नज़दीक है।

तुम्ही से तो है

हरपाल सिह
सहायक निदेशक

ये खुशियों की कायनात तुम्हीं से तो है
ये आलम, ये जलवा तुम्हीं से तो है
हर मर्ज की दवा, तुम्हीं से तो है
ये कसमें ये वादे, ये वफा की चाहत, तुम्हीं से तो है

पथिक को पग दिखलाती
शीतल जल और ठंडी छाया,
पगडंडी ये रोशन तुमसे,
सब सुख ये तुम्हारी माया।
ये खुशियों की कायनात तुम्हीं से तो है
ये आलम, ये जलवा, तुम्हीं से तो है

छन्दों का श्रृंगार रस, कलम न कह पाए जब
छाए घनघोर अंधेरा, निराशा सर्वत्र हो जब,
तुम्हीं लफ्ज पिरोति आयी, नव रस से रचना महकाई.
तुम्हीं गालिब की नज्म प्रिय, और बुल्लेशाह की रूबाई
हर रोल में खरी उतरती, ये बल्ले बल्ले तुम्हीं से तो है ।
ये खुशियों की कायनात तुम्हीं से तो है
ये आलम, ये जलवा तुम्हीं से तो है।

गर तुम न होती, तो क्या होता
नीरस, वीराना ये सब जीवन होता
कौन बंधाता ढ़ाढ़स, कौन जख्मों को सहलाता
सुंदर सुरंग मुहाने पे, न कोई अंश किरण होता
फिजाएं गमगीन, तुम बिन सब सूना, कुछ कमी सी तो है
ये फूलों की खुशबू, तुम्ही से तो है
ये बाग ए बहार, ये रौनक ए चमन,
तुम्हीं से तो है।

नभ पर जल पर, अब तेरी छाप
तल पर आभ्यमान, तेरा प्रताप
आसमां में बल खाती, फाइटर पायलट तू देवी
तन मन से धर्म निभाती, रूग्णों के लिए तू डॉक्टर देवी
दुश्मन के लिए काली तू
कहीं माता, कहीं महाकाली तू
भारत माता के माथे का श्रृंगार तुम्हीं से तो है
ये फूलों की खुशबू, तुम्हीं से तो है।
ये बागे ए बहार, ये रौनक ए चमन,
तुम्हीं से तो है

तू ही देवी, तू ही सबला, तू ही वीरों की जननी
लाख जन्म भी ले गर, चुका न पाए तेरी करनी।
कलम मेरी का जोर नहीं ये अलंकार तुम्ही से तो है।
ये बागे ए बहार, ये रौनक ए चमन तुम्हीं से तो है
ये खुशियों की कायनात तुम्हीं से तो है
ये आलम, ये जलवा तुम्ही से तो है।

***

मेरी प्यारी दुल्हनिया

अनिल कुमार
प्र.श्रे.लि.

दुल्हन बन कर जब तुम मेरे घर आई, घर में ढेर सारी खुशियाँ तुम लाई।।

पहले दिन मीठे की रस्म में, हल्वा जब तुमने बनाया,

खूब हुई तारीफ़ तुम्हारी, सबने बड़े प्यार से मिलकर उसे खाया।

और मन ही मन मेरी तरफ देखकर तुम मुस्कराई।

भाग्य मेरा अलग सा चमक गया, जब से साथ मिला तुम्हारा।

धीरे-धीरे दिन बीतते गये, रिश्ता हमारा और भी गहरा और प्यारा होता गया।

वैसे तो अरेंज़ मैरिज़ हुई थी हमारी, दो परिवारो ने मिलकर रिश्ता जोडा था हमारा।

शुरू शुरू में कभी आप शरमाते तो कभी मैं, पता ही नहीं चला यह शर्माना कब प्यार में बदल गया।

मैं तो कहता हूँ शादी हुई है मेरी तुमसे, थोडा प्यार भी जताया करो।

ऐसे चुप ना रहा करो मुझसे अपने दिल की बातया करो।

वैसे तो मैं जानता हूँ बे इन्तहाँ मोहब्बत है तुम्हे मुझसे, पर बस इसे थोड़ा जताया भी करो।

थोडा पास आया करो, यूँ ना सताया करो।

एक ही थाली में खाना लगाया करो, प्यार से अपने हाथो से खिलाया करो।

और मेरे हाथो से भी खाया करो, यूँ ही प्यार को बढाया करो।

हर मुश्किलों में साथ तुम मेरा देती हो, तभी तो अर्धांगिनी तुम मेरी कहलाती हो।

उठो जल्दी काम पर नहीं जाना है, यह कहकर तुम मुझे जगाती हो।

और फिर मुझसे प्यार जताती हो, जानू कहकर मुझे उठाती हो।

सोच रहा हूँ घूमने तुम्हें कहीं ले कर जाऊँ, जीवन संगिनी के साथ दो पल खुशियों के बिता आऊँ।

तुम्हारे आने से खुशियाँ अपार मेरे जीवन में आई, दुल्हन बन कर जब तुम मेरे घर आई।।

***

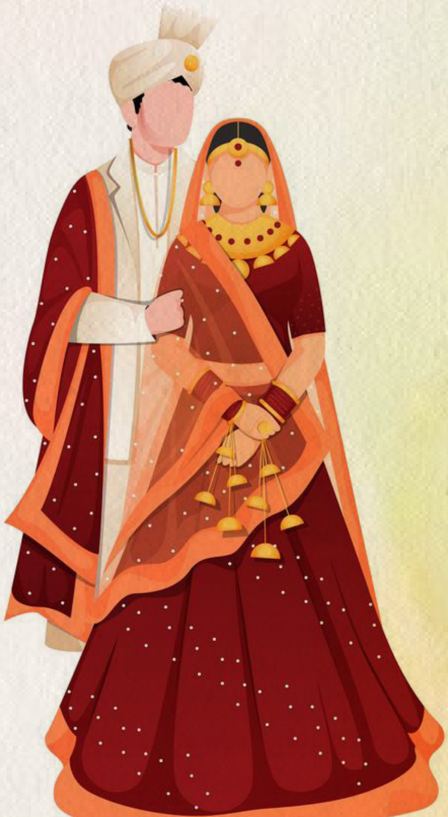

महिला दिवस 2022

अपना बचपन कैसा था ...

चाहत गोयल
का. अधीक्षक

अपना बचपन कैसा था...
बिल्कुल इस कविता के ही जैसा था,
सिर पर स्कूल का भारी बस्ता था..
फिर भी दिमाग बिल्कुल हल्का था,
गर्मी की छुट्टियों का आना था..
गिट्टियों व कंचों का बक्सों से निकाल ले जाना था।
शहतूत, बेर व इमली को पेड़ों से तोड़...
मिल बाँट कर खाई जाती थी,
25 पैसे की संतरे की टाफियाँ और..
एक रुपये की कुल्फी सबके मन को भाती थी।
घरों के बरामदों मे हर दिन..
ढेरों गोरैया चहचहाती थी,
आसमान मे टूटता तारा दिख जाने पर..
ख्वाहिशें पूरी हो जाती थी।
कागज का बना हेलिकाप्टर..
हवा मे उड़ाया जाता था,
फिर शोर मचाकर पूरा घर ..
सिर पर उठा लिया जाता था।
कड़ी धूप मे जब, सब बड़े..
घरों मे सोने चले जाते थे,
तब हम सब दोस्त मिलकर..
साइकिल चलाने बाहर निकल जाते थे।
घंटों घंटों भर बत्ती न आने पर..
हाथ से पंखे झुलाये जाते थे,
रात को छतों पर सोते और..
सुबह सूरज की रोशनी से जगाए जाते थे।
बारिश के रिम-झिम पानी मे..
कागज की कश्ती चलाते थे,
फिर माँ के हाथ की बनी हुई
गर्मा-गर्म पकोड़ियाँ खाते थे।
खेल भी उस जमाने मे..
बड़े ही कमाल के हुआ करते थे,
पकड़म-पकड़ाई, पिट्ठू व खो-खो..
सेहत सुधारने का सबसे बेहतर जरिया थे।
लुका - छुपी खेलते समय..
पड़ोसियों के घरों मे छिप जाते थे,
राजा मंत्री चोर सिपाही के खेल मे..
चोर बनकर भी हंसी से खिलखिलाते थे।
गुड्डे - गुड्डियों की शादी करवाने का..
किस्सा ही अनमोल था,
कैरम, लूडो और सांप सीढ़ी खेलने का..

पिट्ठू

आँसुओं के माध्यम से संघर्ष करने वाली मुस्कान से अधिक सुंदर कुछ भी नहीं है।

सबको बेहिसाब शौक था।
शक्तिमान से अच्छी आदतों की..
हर रोज सीख ली जाती थी,
चंपक व पंचतंत्र की किताबें मिल जाने पर..
पूरी दुनिया जीत ली जाती थी।

एक बार सिर के टकराने से..
सींग निकलने की बात पर विश्वास कर लेते थे,
इसलिए दोबारा खुद से सिर टकराकर..
ठहाके मार के हंस लेते थे।
हर महीने दो महीने मे मदारी..
बंदर का तमाशा दिखाने आता था,
तमाशा दिखाने के बदले मे वो..
कटोरी भर आटा चावल ले जाता था।
दोस्तों को विद्या कसम देकर..
सारे सच उगलवा लिए जाते थे,
परीक्षा मे अच्छे अंक आ जाने पर..
अध्यापको पर खुशी मे फूल बरसाए जाते थे,
इतवार के सुबह 8 बजने का..
एक अलग ही इंतजार होता था,
दूरदर्शन पर रंगोली देखने का..
अजीब सा चाव मन मे रहता था।
एक जादू तो ऐसा था, जो..
न जाने हर दिन कैसे होता था !!
रात को सोफ़े पर सोते थे..
सुबह बिस्तर मे जागना होता था।

एक एक करके चवन्नी अठनी..
गुल्लक मे जमा की जाती थी,
फिर स्कूल पिकनिक जाने की जिद्द मे..
वही मिट्टी की गुल्लक फोड़ दी जाती थी।
रिश्ते भी उस समय के..
बड़े ही खट्टे मीठे हुआ करते थे,
गाय माँ, बिल्ली मौसी, सूरज दादा..
और चंदा मामा प्यारे होते थे।
नानी - दादी हमारे साथ..
अपना बचपन जी लेती थीं,
राजा रानी की कहानियाँ सुनाकर..
मन को वो मोह लेती थीं।
वो भी क्या जमाना था..
जब जेब मे बचपन का खजाना था।
न कमाने की चिंता थी..
न ही जमाने की परवाह थी,
बस मौज भरी ज़िंदगी थी..
और मस्ती की चाह थी।
तब लगता था कि बस..
जल्दी से बड़े हो जाएं,
और अब लगता है कि..
वो बचपन फिर से वापिस लौट आए..
वो बचपन फिर से वापिस लौट आए !!

***

शौंक भले कितने ही ऊँचे रखो लेकिन जिम्मेदारी से बढ़कर नहीं।

माँ

सूरजभान
सहायक

ऐसे ही बोल जाते हो, अगले साल अगली बार फिर कभी एक बार ठहर कर इन शब्दों का खोखलापन सोचना, सोचना कि जिसने तुम्हें जरूरत से ज्यादा दिया तुम उसे हक से आधा दे रहे हो, जिसकी जिंदगी का सूरज एक दिन पश्चिम की ओर सरक रहा है। तुम उसे अगले साल का वादा दे रहे हो। तुम्हारे कलैण्डर पर बरसों-बरस बाकी होंगे, माँ के दिन महीने साल खो चुके हैं, कभी गौर से देखना तुम्हें सोना- सोना कहते उसके बाल चाँदी हो चुके हैं। अगला साल किसने देखा है यार ये वीकेंड माँ के साथ गुजारो उसकी खुशी से बढ़ के कोई खुशहाली क्या होगी तुम्हें देख कर माँ की आँखें चमक उठेंगी इससे बड़ी दिवाली क्या होगी।

कुछ अजीब है मेरी माँ रंग बदलने में माहिर, मैं उदास नजर आऊं तो दोस्तों जैसी हमदर्द बन जाती है। कोई गलती करूं तो पापा की तरह सख्त बन जाती है और घबराऊं तो बड़े भाई की तरह सरपर्सत बन जाती है। ये कैसा जादु है जो बाकी लोग नहीं कर पाते। माँ अकेली हर रिश्ते की जगह भर देती है पर दुनिया के सारे रिश्ते मिलके एक माँ की जगह नहीं भर पाते। सुना है कहीं एक जन्नत है जहां दूध की नदियां बहा करती हैं। पेड़ों पर परियां रहा करती हैं, वहां कोई दुख नहीं है,कोई दर्द नहीं, खुशी पे कोई पहरा नहीं, हंसी पे कोई शर्त नहीं है। बिन बाती उजाला है बिन बादल बरसात है वहां रातों से मीठे दिन हैं और दिन से रोशन रातें हैं। लेकिन ये सब सूनी-सुनाई बातें हैं और सुनी-सुनाई बातों का क्या भरोसा ये दुनिया है कुछ भी कहती है आसमानों में जन्नत क्या ढूंढना, क्या मेरे यार बगल वाले कमरे झांक लो मेरे यार जहां माँ रहती है। माँ चली गई कहीं बादलों के पार उसका कमरा खाली हो गया और उसका मंदिर सूना। एक दिन पंडित जी को बुलाया उनके मंदिर में दीया जलाया उनके लड् गोपाल को भोग लगाया। जो-जो माँ करती थी सबकुछ वैसे ही दोहराया। फिर पंडित जी ने कहा पूजा संपन्न हुई अब अपने लिए जो मांगना चाहते हो ईश्वर से मांग लो। क्या मांगता और कैसे मांगता पंडित जी को कैसे समझाता कि मेरी आवाज को आसमान तक जाने की आदत ही नहीं पड़ी जब तक माँ थी तब तक अपने लिए कुछ मांगने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

आँखें तो हम सबके पास हैं माँ के पास दूरबीन होती है। घर में कुछ खो जाए तो वो सिर्फ माँ को मिलता है। मेरा पर्स, बहन का रिबन, बाबू जी की घड़ी, दादा जी की छड़ी। लेकिन माँ कुछ छुपा के रख दे तो उसे कोई ढूंढ नहीं सकता। मैनें कोशिश की घर का एक-एक कोना छान मारा लेकिन मुझे वो दुख नहीं मिले जो माँ ने हम सबसे छुपा कर रख दिये थे। वो दर्द नहीं मिले जो किसी तयखाने में दबा कर रख दिए थे। एक-एक अलमारी झांक ली कहीं वो सपने नहीं मिले जो हमें जोड़ने में टूट गए, बिस्तर की एक-एक तह खोल दी पर वो आँसू नहीं मिले जो तकिए के किसी गिलाफ में गिर कर सूख गए। ये लूका-छिपी ठीक है माँ जो छुपा दिया, मुझे कोई शिकायत नहीं है लेकिन कभी तू छुप गई तो में कैसे ढुंढ पाऊंगा मेरे पास तो सिर्फ आँखें हैं माँ तेरे जैसी दूरबीन कहां से लाऊंगा।

***

आशापुरी माता मंदिर

संदीप कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

हिमाचल प्रदेश को देवों की भूमि कहा जाता है। यहां देवी-देवताओं का वास है। हिमाचल में कई मंदिर है जिनमें से आशापुरी मंदिर एक है। आशापुरी मंदिर कांगड़ा जिले के पालमपुर तहसील से 30 किलोमीटर दूर नाग बन के सबसे ऊंचे धोलाधार श्रृंखला के शिखर पर स्थित है। आशापुरी मंदिर का निर्माण पांडवों ने उस समय कराया जब वे अज्ञातवास के दिनों में यहां कुछ समय के लिए रूके थे।

मां आशापुरी को वैष्णों देवी का रूप माना जाता है आशापुरी मंदिर हमेशा से ही अपनी कलाकृतियों के लिए हिमाचल में प्रसिद्ध रहा है। आशापुरी मंदिर को पुरातत्व विभाग की देखरेख में रखा गया है।

इस मंदिर के आस-पास के शहर व गांव के लोग आशापुरी माता को कुल देवी मानते हैं तथा जब किसी के घर में शादी होती है तो नवविवाहित जोड़ों को वे यहां सबसे पहले दर्शन करवाने अवश्य लाते हैं। यहां वैसे तो लोग अक्सर रोज माथा टेकने एवं आशीर्वाद लेने आते हैं परंतु नवरात्रों में भीड़ काफी ज्यादा बढ़ जाती है।

मंदिर के आस-पास बहुत ही मनमोहक दृश्य देखने को मिलते हैं यहां की हरी-भरी पहाड़ियां और छोटी नदियां मंदिर की सुदंरता में चार चांद लगा देती हैं।

***

बेटी का पत्र

रेयोना
पुत्री, श्री ऋषि, अधीक्षक

ये गगन, ये तारे, ये चँदा मामा
छल-ठल अठखेलियाँ करती ये नदी
मुझको ना भाए बिल्कुल भी ये
मेरे पापा साथ मेरे ना हो यदि ।।

न खिलौना, न नई ड्रेस, न पार्टी
बस सब लूंगी, जब पापा आओगे तभी
मेरे देस्त, मेरे हीरो है मेरे पापा
जल्दी से ट्रांसफर लेकर आओ अभी

***

बेटी के पत्र का जवाब

तू मुझ से यू शिकायत न कर
जो तुझे कुछ पल के लिए हसा दे
और तेरे मासूम चेहरे पर ला दे खुशियां
उन खिलौनों को यू लोटा ने की बात ना कर
जब जब मेरी याद आए
मेरे दिए हुए खिलौनों को देख लेना
वो जोकर भी तुम्हें हसा देगा
उस रूप में मुझे देख लेना
मेरी बिटिया रानी
अब यू रूठ जाने की बात ना कर
कमजोर न पड़े तेरा हीरो
यू मुझे रुलाने की बात ना कर

भूर्शिंग महादेव (Bhurshing Mahadev)

सचिन गौतम
प्रवर श्रेणी लिपिक

देव भूमि हिमाचल प्रदेश वास्तव में ही ऋषि मुनियों की भूमि रही है। अत: महादेव की कहानी भी इसी सत्य को चरितार्थ करती है। जिला सिरमौर में नाहन-शिमला राजकीय उच्च मार्ग पर सरांहा से केवल नौ किलोमीटर दूर ग्राम पजेली टिक्करी पजेली, क़ागधार में भूर्शिंग महादेव की देवस्थली है ठीक ऊपर पर्वत शिखर पर जो समुद्रतल से लगभग 6500 फीट ऊँचा है पर भूर्शिंग महादेव का प्राचीन मंदिर भव्यमान है। जहां से चारो ओर का अति विहंगम दृश्य मन को प्रसन्नचित करता है तथा मन को शांति प्रदान करता हुआ अध्यात्मवाद की ओर अग्रसर करता है।

"इस पवित्र मंदिर को भूर्शिंग महादेव (Bhurshing Mahadev), भूरेश्वर मंदिर(Bhureshwar Mahadev) और भूरसिंह महादेव मंदिर (bhursingh mahadev temple) के नाम से भी जाना जाता है।"

भू+लिंग कांलातर में भूशिंग । भू+ ईश्वर- भूरेश्वर । यह भूर्शिग महादेव के प्रचलित नाम है। द्वापर युग में इस पर्वत शिखर पर बैठ कर भगवान शंकर ने माँ पार्वती के कहने पर महाभारत का युद्ध देखा था, तब से यहाँ भूमि पर शिवलिंग की उत्पति मानी जाती है । मंदिर 1870 मीटर की ऊंचाई पर पेजरली गांव में स्थित है और एक स्थानीय देवता (देवता) – भूरी (भूर) सिंह को समर्पित है।

भूरेश्वर महादेव की कथा

सौतेली मां के दुर्व्यवहार से दुःखी भाई-बहन (जिनके नामकरण अज्ञात है) अल्पायु में ही गाय, बैल, भेड़-बकरी चराने के लिए इसी पर्वत शिखर पर आते थे तथा शिवलिंग के ईर्द-गिर्द खेलते और सोते थे। शिवशंकर महादेव ने इन्हें अपने चरणों में स्थान दिया तो समय व्यतीत होने पर दोनो अबोध भाई-बहन शिव की अराधना करते करते शिव भक्त हो गए और भगवान शंकर ने इन्हें देव शक्ति प्रदान कर अपना गंण (भाई देवता रूप में बहन देवी रूप में बना दिया)। परन्तु आम जनता के लिए यह दोनों उस समय अबोध बालक-बालिका बने रहे।

कामयाब इंसान भले ही खुश न रहे, खुश रहने वाला इंसान कामयाब जरूर होता है।

शरद ऋतु के एक दिन महाप्रलय वाली वर्षा, तुफान, ओलावृष्टि, बर्फबारी में पशु चराने गये । भाई-बहन से एक गाय का बछड़ा गुम हो गया। सौतेली माँ ने दोनो बच्चों को उस बछड़े की खोज कर लाने के लिए जंगल में भेज दिया। पर्वत शिखर पर शिवलिंग के पास शीतप्रकोप से एवं देवयोग के कारण बछड़ा निश्चल हो गया था। भाई ने जब यह देखा तो स्वयं वहाँ रह गया और बहन को घर भेज दिया। दूसरे दिन पिता ने अपने पुत्र और बछड़े की खोज में जंगल में उसी पर्वत शिखर पर जाकर देखा तो नीचे बछड़ा और ऊपर शिवलिंग के पास लड़का निश्चल खड़े थे जो देखते ही देखते अंतर्ध्यान हो गये। सौतेली मां ने बहन का विवाह काना कडोह (जो महाबली था परन्तु वास्तव में अंधा था) से करने का निश्चय किया जिसे पिता ने भी स्वीकार कर लिया। तदन्तर काना कडोह बारात लेकर पर्वत शिखर पर आया। बहन की विदाई के समय भाई-बहन बहुत प्यार-प्रेम से मिले। भाई को छोड़कर बहन ससुराल जाने को तैयार नही थी, भाई ने बहुत मिन्नत की और विदाई दी, करीब एक किलोमीटर ग्राम कथाड़ की तरफ जाते हुए लगभग 50 बीघे लम्बे चौड़े मैदान भ्यूतल (भूतल) में डोली से लड़की ने छलांग लगा दी तथा अपनी देव शक्ति को प्रयोग करते हुए लड़की ने छलांग लगाते ही आधा मैदान अपने साथ घिन्नी घाड की तरफ गिराते हुए चली गई तथा एक किलोमीटर नीचे जाकर अर्तध्यान होकर एक बान के वृक्ष के नीचे भाभड़ के घास पर पवित्र जलधारा के रूप में प्रकट हो गई। यह जलधारा देवी नदी के रूप से विख्यात होकर कई ग्रामों को पेय तथा सिंचाई जल की सुविधा प्रदान करती हुई हरियाणा प्रदेश में प्रवेश करती है।

भूर्शिंग महादेव (Bhurshing Mahadev) और भूरेश्वर मंदिर (Bhureshwar Mahadev) पर्व

जिन बच्चों (भाई-बहन) को लोग अबोध असहाय सौतेली माँ के दुर्व्यवहार से पीड़ित मानते थे उन्होने भगवान शिव द्वारा प्रदत देवशक्ति का प्रयोग करके सबको आश्चर्य चकित करके दया करने का पाठ सिखा कर शिव लोक को प्राप्त हुए तथा इस विवाह विदाई कार्यक्रम, भाई-बहन का प्यार, प्रेम, दयावान बनने के लिए देवशक्ति आस्था रखने हेतु प्रति वर्ष कार्तिक मास की शुक्लपक्ष में दीवाली के ठीक ग्यारवें दिन एकादशी तिथि को महान

पर्व (बड़ा मेला व पूजन) मनाया जाता है। जिसमें पजेली देवस्थली से ढोल-नगाड़ो व पुजारियों सहित शोभा यात्रा का आरम्भ होता है तथा यह शोभा यात्रा पर्वत शिखर पर स्थित भूर्शिंग महादेव (Bhurshing Mahadev) मन्दिर तक जाती है। इस महान पर्व पर रात को भाई-बहन का पवित्र अपूर्वमिलन होता है तथा द्वादशी को मेला पूर्ण हो जाता है।

इस महान पर्व में लाखो श्रद्धालु भूर्शिंग महादेव मन्दिर (Bhurshing Mahadev) में महादेव के दर्शन कर मनौतियां मान कर पूजन कर अपने को कृत कृत्य करते है। श्रावण माह की शुक्लपक्ष की एकादशी को उपरोक्त कथानुसार कार्यक्रम होता है परन्तु यह केवल दिन का होता है रात्री का नहीं। वैसे भी प्रतिदिन सैंकड़ो श्रद्धालु भक्तजन मनीतियों के लिए, पूजन के लिए भुर्शिग महादेव मन्दिर में दर्शन के लिए आते रहते हैं।

कैसे पहुंचे भूर्शिंग महादेव

वर्षा शालिका ग्राम पजेली से मन्दिर केवल एक किलोमीटर है। भूरेश्वर मंदिर कुमारहट्टी – नाहन रोड पर स्थित है, जिसकी कुमारहट्टी से लगभग 30 कि.मी की दुरी है। यह मंदिर बहूत ही सुंदर है । आप जब भी हिमाचल प्रदेश आयें इस मंदिर में ज़रुर जाऐं , यह पहुँच कर आपको बहुत ही अदभुत सी ख़ुशी का अनुभव होगा । यहां चारों तरफ बहुत शांति है और सुंदर नज़ारा है | चण्डीगढ़ से इसकी दुरी लगभग 90 किलोमीटर है.

***

अवाहदेवी मंदिर (हमीरपुर, हि.प्र.)

राकेश कुमार
सहायक

अवाहदेवी मंदिर हिमाचल प्रदेश के धार्मिक स्थलों में से एक है जिसमें प्रत्येक दिन हजारों की संख्या में श्रदालु देश के विभिन्न स्थानों से पहुंच कर शीश झुकाते हैं तथा मनोकामना मांगते हैं। यह मंदिर हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर तथा मंडी जिला के सीमा क्षेत्र पर है जोकि जिला मुख्यालय हमीरपुर से लगभग चौबीस किलोमीटर की दूरी पर पूर्व की तरफ स्थित है। यह मंदिर जिला हमीरपुर की सबसे ऊंची जगह पर बनाया गया है इसकी ऊंचाई संमुद्र तल से 1237 मीटर है जहां से पूरे हमीरपुर का नजारा देखने को मिलता है। यह मंदिर सैंकडों वर्ष पुराना है।

इस मंदिर को लेकर माना जाता है कि हमीरपुर जिले के संगरोह नामक गांव में एक किसान हल से खेती कर रहा था। खेती करते समय किसान का हल एक पत्थर से टकरा गया। टकराने के उपरांत पत्थर से रक्त निकलने लगा। इसके बाद क्षेत्रीय लोगों ने पत्थर को बाहर निकाला और माता ने सभी को दर्शन दिए। पत्थर को निकालने के बाद हमीरपुर और मंडी के लोगों में पिंडी की स्थापना को लेकर अत्यंत विवाद हो गया। दोनों जिलों के लोग माता को अपने-अपने क्षेत्र में स्थापित करना चाहते थे। इसी बीच मंडी क्षेत्र के लोग पिंडी को उठाकर चल पड़े। कुछ दूर चलने के उपरांत रास्ते में पिंडी को रखकर आराम करने लगे। जब मंडी के लोग दोबारा से पिंडी को उठाने लगे तब काफी जोर लगाने के बाद भी पिंडी अपनी जगह से नहीं हिली। इसके बाद सभी लोगों की सहमति से पिंडी को उसी जगह पर विस्थापित कर मंदिर बना दिया गया। उस जगह को आज के समय अवाहदेवी के नाम से जाना जाता है। कस्बे का नाम अवाहदेवी पड़ने के पीछे भी रोचक घटना है। कहते हैं पूरे हमीरपुर में ये सबसे ऊंचा स्थान होने के कारण यहां बहुत ही तेज हवाएं चलती थी। किसी के मुख से अचानक ही निकला "वाह देवी" तब से यहां का नाम अवाहदेवी पड़ गया। बनाए गए मंदिर में विस्थापित पिंडी को जालपा पिंडी और मंदिर को जालपा देवी मंदिर कहा जाता है। नवरात्रों में यहां विशाल जागरण तथा भंडारों का आयोजन किया जाता है तथा हर वर्ष पांचवें श्राद पर यहां बहुत बड़ा भंडारा आयोजित किया जाता है।

***

पहाड़ों की यात्रा

नीना कश्यप
प्रवर श्रेणी लिपिक

"पहाड़ बुला रहे हैं और मुझे जाना होगा," जॉन मुइर द्वारा सही कहा गया है, क्योंकि पहाड़ों को देखना नैसर्गिक सौंदर्य के आनंद की अनुभूति है । मैं अपने पांच दोस्तों के साथ कांगड़ा और चंबा घूमने गई । यात्रा का मुख्य उद्देश्य हिमाचल प्रदेश के लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर फील्ड वर्क, देखे गए स्थलों का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व और हिमाचल प्रदेश में मंदिर वास्तुकला का अध्ययन था।

पहले दिन का अधिकांश हिस्सा यात्रा में व्यतीत हुआ और मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहूति देने वाले सैनिकों की याद में निर्मित धर्मशाला में शानदार युद्ध स्मारक के दर्शन के साथ समाप्त हुआ।

अगले दिन, हमारी सुबह चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में कटोच राजवंश द्वारा निर्मित कांगड़ा किले की यात्रा के साथ शुरू हुई। किले का प्रवेश दो द्वारों के बीच एक छोटे से प्रांगण के माध्यम से होता है, जो सिख काल के दौरान बनाए गए थे, जैसा कि प्रवेश द्वार पर एक शिलालेख से प्रतीत होता है। यहां से, अहानी और अमीरी दरवाजा के माध्यम से एक लंबा और संकीर्ण मार्ग किले के शीर्ष तक जाता है, दोनों कांगड़ा के पहले मुगल गवर्नर नवाब सैफ अली खान के द्वारा निर्मित था। दोपहर मसरूर में बिताई गई, जहां भारतीय देवताओं को समर्पित रॉक-कट मंदिर हैं। वे उत्तर भारतीय नागर स्थापत्य शैली का एक उदाहरण हैं, जो हिंदू धर्म के शिव, विष्णु, देवी और सौरा परंपराओं को समर्पित है, इसकी जीवित प्रतीकात्मकता संभवतः एक हेनोथिस्टिक ढांचे से प्रेरित है। मंदिर के उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व और उत्तर-पश्चिम की ओर तीन प्रवेश द्वार हैं, जिनमें से दो अधूरे हैं। पूरे परिसर को समान रूप से एक चौकोर ग्रिड पर रखा गया है, जहां मुख्य मंदिर मंडल पैटर्न में छोटे मंदिरों से घिरा हुआ है। तीसरे दिन की शुरुआत चंबा में रावी नदी की झलक के साथ हुई। पानी शुद्ध नीला था और सम्मोहित कर देने वाली बड़बड़ाहट की आवाज के साथ बह रहा था। नाश्ते के बाद हम भरमौर की ओर चल पड़े, जिसने पीर पंजाल पर्वतमाला की मंत्रमुग्ध कर देने वाली झलक के साथ हमारा स्वागत किया। दिन प्रसिद्ध चौरासी मंदिर का अध्ययन करने में व्यतीत हुआ, जिसका नाम मंदिर की परिधि में बने 84 मंदिरों के कारण रखा गया था। मणिमहेश का सुंदर शिखर शैली का मंदिर परिसर के केंद्र में स्थित है। चौरासी मंदिर परिसर लगभग 7वीं शताब्दी में बनाया गया था। चौरासी मंदिर का निर्माण भरमौर के राजा साहिल वर्मन द्वारा 84 योगियों के सम्मान में किया गया था, जो कुरुक्षेत्र से आए थे और वहां ध्यान लगाया था, जब वे मणिमहेश झील के रास्ते भरमौर से गुजर रहे थे। दिन का अंत चंबा के प्रसिद्ध व्यंजनों के साथ हुआ, जिसे समग्र रूप से चंब्याली धाम के नाम से जाना जाता है। अपने घर वापस जाने से पहले, प्राचीन लक्ष्मीनाथ मंदिर के दर्शन के साथ-साथ चंबा शहर में पर्याप्त समय बिताया। यात्रा ज्ञानवर्धक और मनोरंजक दोनों थी। हमारे द्वारा एकत्रित की गई यादें जीवन भर चलती रहेंगी और आत्मसात किया गया ज्ञान शाश्वत रहेगा।

***

यात्रा वृतांत केरल
(Travelogue Kerala)

कमील अहमद
सहायक (राजस्व शाखा)

वर्ष 2022 में जब मैंने अपने परिवार के साथ पहली बार हिमाचल से दूर लम्बे समय के लिए घूमने का मन बनाया तो मन मे सबसे पहला ख्याल केरल जाने का आया। मैंने इस प्लान के बारे में परिवार के साथ साझा किया तो मेरी पत्नी व बेटी (सारह कमील) बहुत ख़ुश हुई। केरल को "ईश्वर का देश" (Gods Own Country) कहा जाता है, यात्रा वृतांत आगे लिख रहा हूँ:-

यात्रा की शुरुआत

बद्दी (सोलन) से टैक्सी लेकर कालका स्टेशन और कालका से 6:15 बजे कालका शताब्दी रेल से दिल्ली के लिए निकल गए। अगले दिन सुबह दिल्ली से 6:15 बजे त्रिवेंद्रम राजधानी रेल से केरल के लिए रवाना हो गए।

अगले दिन रेल गाड़ी केरल में प्रवेश कर चुकी थी हम सभी खिड़की से केरल की सुंदरता को देखने लगे । हम सब बहुत ख़ुश थे क्योंकि समुद्र को हम पहली बार देख रहे थे। नारियल के पेड़ तथा अन्य पेड़ पौधों केरल को खूबसूरत बनाती है।

दूसरे दिन हम त्रिवेंद्रम से कन्याकुमारी के लिए रवाना हो गए वहाँ हमने तिरुवल्लुवर प्रतिमा, विवेकानन्द रॉक मेमोरियल, गाँधी मेमोरियल (गाँधी मण्डपम) तथा थ्री सी मेल्टिंग प्वाइंट व कन्याकुमारी बीच देखा।

विवेकानन्द रॉक मेमोरियल कन्याकुमारी बीच में स्थित है तथा गाँधी मेमोरियल मे एक ख़ास बात ये है कि उसकी छत में एक छेद किया गया है जिससे 2 अक्तूबर को सूरज की किरणे गाँधी जी के अस्थिओ पर आती है।

अगले दिन हम सनराइज प्वाइंट गए, वहाँ माहौल शांत और समुद्र का पानी उछाल मार रहा था, साथ ही सूरज पानी से बाहर निकलता हुआ दिख रहा था इसके बाद हम कोलम बीच गये और KSRTC कोलम के सामने से Boat jetty चलती है उस पर सवार होकर समुद्र के ओर चल पड़े। दोनो ओर छोटे छोटे घर बने हुए थे जो कि सुंदर दिख रहे थे, फिर हमने वही पास में स्थित एडवेंचर पार्क (Adventure park) और शहर देखा। अगले दिन हम अल्लेप्पी बीच व मरारी बीच गए वहाँ से हम हाउसबोट (House boat)आ गए।खाना,जलपान,चाय/कॉफी सब उसी में उपलब्ध था। वहाँ boat मे हम शाम तक समुद्र व बैकवाटर में टहले। इसी बैकवाटर मे शाहरूख खान और प्रीति जिंटा की "दिल से" मुवी के गाने "जिया जले जान जले नैनों तले धुआँ चले, धुआँ चले"की शूटिंग हुई थी।

उसके बाद हम मुन्नार की वादियों मे गए जहां शाहरूख खान और दीपिका पादुकोण की मूवी "चेन्नई एक्सप्रेस" की "कश्मीर मैं, तू कन्याकुमारी" गाने की शूटिंग हुई थी। यहाँ से हम एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान(Eravikulam National Park) गए। एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान जो की नीलगिरी तहर(Tahar) का आवास और अभयारण्य है, इस अभयारण्य मे लोग विशिष्ट नीलकुरिंजी फूल की ख़ूबसूरती निहारने दूर दूर से आते है जो हर 12 साल में एक बार खिलता है । इसी पार्क में दक्षिण भारत के सबसे ऊँची चोटी अनामूडी छोटी 2695 मीटर ऊँची स्थित है । जोकि देखने में चट्टान की तरह है। वहाँ से हम आयुर्वेद औषधि और मसाले के बगीचे देखने गए इसके बाद अटुकड वाटरफॉल (Attukad Waterfall) गए ।

अगले दिन हम Top station गए, यह मुन्नार का सबसे ऊँचा स्थान और इस क्षेत्र का सबसे ऊँचा रेलवे स्टेशन है। यहाँ पहुँचने के बाद ऐसा लग रहा था कि बादल को अपने हाथों में ले । एको प्वाइंट पर ख़ुद की आवाज सुनाई दे रही थी। मैंने एक बार बोला "तुझसे मोहब्बत है" मुझे 3-4 बार सुनाई दिया "तुझसे मोहब्बत है"। एको प्वाइंट से निकल कर शुटिंग प्वाइंट, मुट्पेटी डेम, एलीफेंट राइडिंग प्वाइंट, फोटो प्वाइंट और फ्लाउर गार्डेन की सैर की।

फिर हम थेकड़ी मे पेरियार राष्ट्रीय उद्यान (Periyar National Rark) घूमने गए वहाँ हमे वोटिंग सफारी के दौरान काला बंदर, हिरण, हाथी तथा अनेकों जानवर व पक्षी दिखे।फिर हम ब्राहम स्पाइस गार्डेन देखने गए, मिस्टर अब्राहम ने हमें इलायची के पौधे, केले, कटहल, दालचीनी, नींबू, कॉफी के पौधे इत्यादि दिखाए तथा कारख़ाने में ले गए और मशीन तथा मसाला तैयार करने की प्रक्रिया भी बताई।

अगले दिन हम तिरुचिरापल्ली मे एशिया के सबसे बड़े पार्क बटरफ़्लाई पार्क गए जोकि श्री रंगम में कावेरी नदी के तट पर स्थित। पार्क के गेट पर बड़े आकार में बटरफ़्लाई का चित्र बना हुआ था, संग्रहालय के पास ही चिड़िया घर मे हमने हिरण, सांप, भालू, तेंदुआ व अनेक तरह के जानवर व पक्षी देखे ।पास के बाजार से हमने केले के पकौड़े खाए जोकी बहुत ही स्वादिष्ट था व केरल ट्रेडिशन का नाच देखा।

यात्रा के अंतिम दिन हम सब पूवार (Poovar) बैकवाटर मे शिकारा से पानी मे घूमने निकल गए जोकि संकीर्ण गलियों से होकर पानी में आगे की ओर जाता रहा एक जगह पर रूक कर पेड़ से तोड़कर डाभ पीया, वही आगे पानी में ही स्थित रेस्टोरेंट था जहाँ हमे ज़िंदा मछली पकड़कर फ्राई करके खिलाया गया।

कोलम बीच पर मैं और मेरी बेटी सारह कमील ने बहुत मस्ती की इसी बीच के पास स्थित विझिंजम (Vizhinjam) लाईट हाउस बहुत ही ऊँचा टॉवर था शाम को पास मे सतिथ कपड़ों के बाजार से मैंने केरल ट्रेडिशन में बेटी का ड्रेस और बेटे के लिए शर्ट व लूँगी लिया। फिर हमने राजधानी रेल लिया और दिल्ली के लिए निकल गए। केरल इतना खूबसूरत है कि मेरी बेटी (सारह कमील) की अंतिम शब्द "पापा य़ही घर बनालो"।

***

दक्षिण भारत के दर्शनीय स्थलों की मनोरम यात्रा

संतोष कुमार
सहायक

हमारे जीवन में यात्रा चाहें वह किसी भी रुप में हो उसका ज्ञ्यान अर्जन हेतु बहुत ही महत्व हैं । इन्ही बातों के ध्यान में रखतें हुए दफ्तर व घर के रोजमर्रा के कार्यो को विराम देते हुए अपनें मन व तन को नयी ताजगीं व स्फूर्ति से सराबोर करने के उद्देश्य से मैने में दक्षिण भारत की मुख्य दार्शनिक व धार्मिक स्थलों की सुखद यात्रा करने का निश्चय ।

इसके फलस्वरुप मैने सर्वप्रथम मैने केरल राज्य के तिरूवनन्तपुरम के प्रसिद्ध मंदिर स्वामी पद्मनाभस्वामी मंदिर का भ्रमण करने का निश्चय किया । केरल राज्य में प्रवेश करते ही मार्ग के दोनों ओर शान खड़ें नारियल के वृक्ष एवं वहां की मनोरम वादियां स्वतः ही मानो केरल राज्य की पहचान देते हुए हमारा अभिन्दन कर रही हो।

मैनें मन में उत्सुकता का भाव लिए हुए पद्मनाभस्वामी मंदिर के भवन का भव्य दर्शन किया । मंदिर की छटा देखतें ही बनती है इततिहासकारों के अनुसार मंदिर का वर्णन स्कन्द पुराण एवं पद्म पुराण में भी मिलता हैं मंदिर की वर्तमान संरचना का निर्माण महाराजा मार्तंड वर्मा द्वारा वर्ष 1750 में भगवान पद्मनाथ को समर्पित कर दिया। यह मंदिर केरल व द्रविड़ वास्तुशिल्प का अनुपम उदाहरण हैं। मंदिर में मुख्य प्रतिमा 18 फीट लंबी है । मंदिर में प्रवेश के समय पुरुषों के लिए धोती व महिलायों को मुख्य रुप से साड़ी पहनना अनिवार्य होता हैं।

केरल की इन सुंदर यादों को मन में बसायें हुए देश के अंतिम दक्षिण छोर पर बसें स्थलीय भूभाग कन्याकुमारी का ओर रवाना हुआ। कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानन्द आश्रम (केन्द्र) में रहनें का सौभाग्य प्राप्त हुआ । जिसकी स्थापनी स्वामी एकनाथ जी रानाडे के द्वारा 7 जनवरी 1972 को किया गया था।

कन्याकुमारी में मुख्य दर्शनीय स्थानों मे एक क्याकुमारी अम्मन मंदिर है जिसका निर्माण पाड्य राजाओं के द्वारा किया गया था। इसके पश्चात मैनें विवेकान्द स्मारक शिला का दौरा करने का निश्चय किया जहां पहुचनें के लिए फेरी सर्विस के द्वारा वहा पर पहुचाँ जाता हैं। विवेकान्द स्मारक शिला समुन्द्र में स्थित एक स्मारक है । इस शिला के चारों ओर समुंद्र की लहरें अडिग शिला को मानों अस्थिर करने का प्रयास करती है । इसी शिला के थोड़ी दूर पर ही पर तमिल कवि तिरुवल्लुवर की 133 फीट ऊची पत्थर की मुर्ति स्थित हैं। वैसे तो कन्याकुमारी में अन्य प्रसिद्ध दर्शिनय स्थल हैं परन्तु समय के आभाव अन्य स्थानों का भ्रमण करना संभव नहीं था।

मेरा अगला पड़ाव रामेश्वरम की प्रसिद्ध धाम था। यह तीर्थ सुंदर शंख आकार का द्वीप हैं। यहां पर स्थित श्री रामनाथस्वामी मंदिर में स्थापित शिवलिंग को बारह ज्योतिलिंगो में से एक माना जाता है। यह मंदिर द्रविड़ वास्तु कला का उदाहरण है जिसका निर्माण लंका के राजा पराक्रमबाहु के द्वारा सन् 1173 ई. मे कराया गया था। इस मंदिर में कुल 22 तीर्थ स्थित हैं। मंदिर के अंदर बनें सैकड़ो खम्बे एक नजर में तो एक दिखतें है परन्तु ध्यान से देखनें पर मैने पाया कि मंदिर का प्रत्येक खंबें की स्थापत्य कला अलग-अलग हैं।

यात्रा के अगलें दिन मैने धनुषकोडि जाने का निश्चय किया। रामेश्वरम से इसकी दूरी लगभग 15 से 20 किलोमीटर हैं। यहा पर दो सागरो का संगम की देखनें का मिलता है एक ओर जहां एक सागर का शांत रुप देखनें को मिलता है वहीं दूसरी सागर का रौद्र रूप देखनें के मिलता हैं। यहां से श्रीलंका केवल 18 मील की दुरी पर स्थित हैं। पूर्व में यहां से श्रीलंका से धनुषकोडि के बीच दैनिक फेरी सेवां चलती हैं। यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक शहर था। जहां से रामेश्वरम के बीच रेलवें लाइन थी। वर्ष 1964 ई. में आयी तूफानी चक्रवात में इस जगह को पूरी तहत से नष्ट

कर दिया था तभी से इस स्थान को भूतहा शहर का नाम दिया गया हैं। आज भी इस जगह पर रात में रुकने की अनुमति नहीं दी जाती हैं। इसी मार्ग में भारत में एक मात्र विभिषण मंदिर स्थित हैं।

अंत में मेरा भ्रमण स्थल तमिलनाडु राज्य का मदुरई शहर था। यहां पर सर्वप्रथम मेरे द्वारा मीनाक्षी मंदिर का भ्रमण किया गया। मदुरई शहर का मुख्य आकर्षण केन्द्र मीनाक्षी स्थापत्यकला शैली में पाण्डयां राजा के द्वारा बनवाया गया था। यह मंदिर भगवान सुंदरेश्वर (शिव) व देवी मीनाक्षी (पार्वती) को संमर्पित हैं। इस मंदिर का भवन समूह लगभग 45 एकड़ भूमि में बना हैं। इसके अंदर सहस्र स्तंभ मण्डप हैं जिसमें 985 तराशे हुए स्तंभ हैं ।

इसके पश्चात मदुरई स्थित तिरुमलई नायक पैलेस में सैर किया जहां की शानोसौकत देखेते ही बनती थी। इस पैलेस का निर्माण इटली के वास्तुकार के द्वारा 1636 ई. निर्माण किया गया था। इस पैसेल में इटली वास्तुकला की झलक दिखती हैं। ब्रिटिस काल में इस पैलेस का इस्तेमाल प्राशसनिक कार्यो में किया जाता था। वर्तमान में इस पैलेस में तमिल एवं अंग्रेजी भाषा में प्रतिदिन लाइट व सांउड शो का आयोजन करके पैलेंस के इतिहास को जींवत किया जाता हैं।

चूंकि ससमाभाव के कारण दक्षिण भारत के बहुत छोटे से भाग का ही भ्रमण संभव हो पाया और अंत में अपने आखिरी पड़ाव की ओर बढ़ते हुए चैन्नई पंहुचें जहां पर दक्षिण भारत यात्रा की आखिरी शांम मरीना बीच पर बच्चों के साथ समय ब्यतीत किया। यहां पर संध्या का नज़ारा चहल-पहल से भरा रहता हैं। इस बीच पर बच्चों के मंनोरजन के कई साधन देखनें को मिलेंगें साथ बीच पर खानें-पीनें के स्टाल भी बहुतायत मात्रा में मिलतें हैं।

वैसे तो मन अभी भी यात्रा तृप्त नहीं हुआ था मन अभी भी लालायित था परन्तु समयाभाव के कारण यही पर यात्रा को विराम देते हुए दक्षिण भारत के यात्रा के सुंदर यादों को मन में संजोयें हुए अपने निवास स्थान की ओर रवाना हुआ।

***

प्रेस रिलीज व अन्य पत्र

कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय में मनाया जा रहा राजभाषा पखवाड़ा

मानपुरा, 9 सितम्बर (बस्सी): कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में 1 से 15 सितम्बर तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया जा रहा है। पखवाड़े के दौरान 4 प्रतियोगिताओं का आयोजन कार्यालय के कार्मिकों के बीच किया गया, जिसमें सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

राजभाषा शाखा द्वारा 2 सितम्बर को हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 3 सितम्बर को वाक प्रतियोगिता, 6 सितम्बर को हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता और 7 सितम्बर को राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं का आयोजन कोविड-19 के मद्देनजर भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों का अनुपालन करते हुए ऑनलाइन किया गया। 8 सितम्बर को एक

मानपुरा : हिंदी कार्यशाला प्रतियोगिता के दौरान वर्चुअल परफॉर्मेंस देते प्रतिभागी। (बस्सी)

हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया गया। सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा) हरपाल सिंह ने बताया कि 14 सितम्बर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाएगा।

राजभाषा पखवाड़ा का समापन समारोह का समापन कल

बद्दी। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में मनाए जा रहे राजभाषा पखवाड़े के दौरान चार प्रतियोगिताओं का आयोजन कार्यालय के कार्मिकों के बीच किया गया। जिसमें सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पखवाड़े के दौरान राजभाषा शाखा द्वारा हिंदी निबंध, वाक प्रतियोगिताएं हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता एवं दिनांक राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सहायक निदेशक प्रभारी राजभाषा हरपाल सिंह ने बताया कि 29 सितंबर को राजभाषा पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया जाएगा जिसमें सभी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इस दौरान एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसमें कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। राजभाषा पखवाड़ा में कार्यालय में महान व्यक्तियों के हिंदी से संबंधित सूक्तियों के पोस्टर लगाए गए है तथा कार्यालय के मुख्य द्वार पर बैनर लगाया गया है। इस अवसर पर कार्यालय में राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाया गया है जिसमें हिंदी पुस्तकें, शब्दावलियां, पत्रिकाएं, टिप्पण आदि प्रदर्शित किए गए हैं। राजभाषा पखवाड़ा के दौरान एक अपील जारी करते हुए उपनिदेशक प्रभारी संजीव कुमार ने कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा निगम मुख्यालय के अनुदेशों के अनुसरण में क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम बद्दी में 14.29 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया जा रहा है। यह प्रसन्नता की बात है कि इस कार्यालय के कार्मिकों द्वारा मूल रूप से हिंदी टिप्पण व आलेखन का कार्य किया जा रहा है। हिंदी संघ की राजभाषा है तथा कार्यालय के काम-काज का निष्पादन हिंदी में ही किया जाना राष्ट्र के प्रति प्रेम दर्शाता है। संविधान सभा ने हम सबको यह संवैधानिक तथा प्रशासनिक उत्तरदायित्व सौंपा है कि हम संविधान के अनुच्छेद 343 तथा 51 के अनुसार राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए प्रचार प्रसार बढ़ाएं।

कार्यक्रम... ईएसआई बद्दी में राजभाषा हिंदी पखवाड़े के समापन पर आयोजित कार्यक्रम में युवाओं ने रंगारंग प्रस्तुतियों से जमाया रंग

हिंदी में काम करने वाले कर्मचारी नवाजे

दिव्य हिमाचल ब्यूरो - बीबीएन

बद्दी। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में राजभाषा पखवाड़ा के समापन पर समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन क्षेत्रीय निदेशक संजीव कुमार मुख्य अतिथि अरविंदो पब्लिक स्कूल की प्रिंसीपल अनिला नायर, राजभाषा प्रभारी अधिकारी हरपाल सिंह, उप निदेशक प्रशांत बैजल, पीबी गुरुंग, एल डा दुष्यंत सिंह, डा राहुल शर्मा, सुनील बोध, तथा वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी रविशंकर ने दीप प्रज्जवलित कर किया। वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी कुमार रविशंकर ने आरंभ में स्वागत संबोधन में कहा कि राष्ट्र आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है ऐसे समय में आवश्यकता है कि गुलामी की प्रतीक रही अंग्रेजी भाषा की जगह हिंदी को ही राजभाषा के रूप में प्रयोग करें। इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख शसंजीव कुमार द्वारा सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई। सहायक निदेशक हरपाल सिंह द्वारा कार्यालय में राजभाषा हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा गीत, कविता, नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। जिसमें अंजना राणा, संध्या आजाद, मनुज ठाकुर, नीना कश्यप, गौरव नेगी, अरविंद मंगलम, वीरेंद्र चौहान, नमनेश, राहुल सुमन के द्वारा लोक

नृत्य नाटी की विहंगम प्रस्तुति की गई। निशांत के गीतों ने खूब तालियां बटोरी। कार्यक्रम में स्थानीय लक्की डांस एकेडमी बद्दी के छात्रों द्वारा देशभक्ति गीतों तथा डांडिया नृत्य आदि की प्रस्तुति को लोगों ने खूब सराहा"। कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में सबसे अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रशासन शाखा को क्षेत्रीय निदेशक द्वारा राजभाषा चल शील्ड प्रदान की गई जिसे शाखा अधिकारी प्रशांत बैजल, शाखा अधीक्षक अंजना राणा तथा शाखा के कार्मिकों द्वारा ग्रहण किया गया। प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र के साथ नकद पुरस्कार से नवाजा। इन प्रतियोगिताओं में मनोज तंवर, अमन कुमार, सचिन गौतम, अनिल, अरविंद मंगलम, नवजोत शर्मा, पप्पू कुमार, संतोष, रमन कटोच, नितिका सूद, कुमार साहिलए गौरव नेगी, विशाल महावर ने पुरस्कार प्राप्त किया। कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिंदी दिवस पर प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। संजीव कुमार उप निदेशक प्रभारी ने कहा कि हिंदी में काम करना सरकारी कर्मचारियों का संवैधानिक कर्तव्य है जिसके द्वारा हम अपने लाभाधिकारी वर्ग से सीधे जुड़ सकते हैं। मुख्य अतिथि अनिला नायर ने कहा कि हिंदी बहुत सरल भाषा है और मैं स्वयं हिंदी भाषी क्षेत्र केरल से होने के नाते हिंदी में बहुत सहजता से वार्तालाप कर पाती हूं। अभिषेक तिवारी,चंद्रशेखर, अंजना राणा, संध्या आजाद, दुखमोचन गोपाल, ऋषि, आलोक रंजन, हेमराज राणाए प्रवीण सालवानए राजेश शर्माए अमरनाथ दुबेए सुमीत कुमार तथा अन्य उपस्थित रहे।

विशेष पखवाड़े के तहत प्रदेश के शाखा कार्यालयों में लगाए सुविधा समागम

बद्दी में आयोजित सुविधा समागम में उपस्थित निगम के अधिकारी

प्रवीण शर्मा प्रचंड समय बद्दी

कर्मचारी राज्य बीमा निगम विशेष पखवाड़े के तहत बुधवार को प्रदेश भर में शिकायत निवारण दिवस का आयोजन कर शाखा कार्यालयों में सुविधा समागम लगाए गए। जहां पर कामगारों और उद्योगपतियों की समस्याओं का मौके पर ही निपटारा किया गया। निगम की शाखा कार्यालय मेहतपुर में 32 नियोजक और कामगार सुविधा समागम में उपस्थित हुए। इसके अलावा औषधालय सह शाखा की ओर से नेरचौक में आनंद टोयोटा मंडी परिसर में सुविधा समागम हुआ जिसमें 30 नियोजक और कामगारों ने अपनी समस्याओं पर चर्चा की। कालाअंब में भी सुविधा समागम का आयोजन किया गया जिसमें 12 नियोजक और कामगारों ने भाग लिया। इसके अलावा पांवटा साहिब में 15 और नालागढ़ में 13 नियोजक और कामगारों ने भागदारी की।

परवाणू के ईएसआई अस्पताल परिसर में 40 और बद्दी में 30 नियोजक और कामगारों ने सुविधा समागम में भाग लिया। इन सभी सुविधा समागमों में अधिकारियों ने उद्यमियों और कामगारों की समस्याएं सुनी और उनका मौके पर ही निपटारा किया। निगम के क्षेत्रीय निदेशक प्रभारी संजीव कुमार ने बताया कि 24 फरवरी से शुरू हुई इस विशेष सेवा पखवाड़े में 28 फरवरी को कामगारों के आवासों की सघनता वाले क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान का आयोजन किया। बद्दी के चक्का रोड के साथ लगती बस्ती में सफाई की। परवाणू में गांव अंबोटा के सेक्टर चार में, नालागढ़ के किरपालपुर में, मेहतपुर के वार्ड पांच संतोषगढ़ में, पांवटा साहिब के रामपुर घाट, कालाअंब के रामपुर जट्टां, नेरचौक के गांव नागचला में स्वच्छता अभियान का सफल आयोजन किया गया। और लोगों को सफाई के प्रति जागरूक किया गया।

बद्दी में मनाया राजभाषा पखवाड़ा

मानपुरा, 29 सितम्बर (बस्सी): कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में 29 सितम्बर को राजभाषा पखवाड़े का समापन हो गया।

कार्यक्रम में कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा गीत, कविता, नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इसमें अंजना राणा, संध्या आजाद, मनुज ठाकुर, नीना कश्यप, गौरव नेगी, अरविंद मंगलम, वीरेंद्र चौहान, नमनेश, राहुल सुमन के द्वारा हिमाचल प्रदेश के लोक नृत्य नाटी की प्रस्तुति दी गई। निशांत के गीतों ने खूब तालियां बटोरीं। लक्की डांस एकेडमी, बद्दी के छात्रों द्वारा देशभक्ति गीतों तथा डांडिया नृत्य आदि की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी में सबसे अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रशासन शाखा को क्षेत्रीय निदेशक द्वारा राजभाषा चल शील्ड प्रदान की गई जिसे शाखा अधिकारी प्रशांत बैजल, शाखा अधीक्षक अंजना राणा तथा शाखा के कार्मिकों द्वारा ग्रहण किया गया।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र के साथ नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। इन प्रतियोगिताओं में मनोज तंवर, अमन कुमार, सचिन गौतम, अनिल कुमार, अरविंद मंगलम, नवजोत शर्मा, पप्पू कुमार, संतोष कुमार, रमन कटोच, नितिका सूद, कुमार साहिल, गौरव नेगी, विशाल महावर ने पुरस्कार प्राप्त किए।

संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण प्रमाणपत्र

अ0शा0 पत्र सं0 11012/01/2023-समिति-3

डॉ. मनोज राजोरिया
संसद सदस्य (लोक सभा)

संयोजक
CONVENOR
तीसरी उपसमिति
Third SUB-COMMITTEE
संसदीय राजभाषा समिति
COMMITTEE OF PARLIAMENT ON
OFFICIAL LANGUAGE
11, तीन मूर्ति मार्ग,
11, TEEN MURTI MARG,
नई दिल्ली / New Delhi-110011

दिनांक: 20.04.2023

प्रिय श्री संजीव कुमार जी,

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति ने दिनांक 20.04.2023 को आपके कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में हुई प्रगति की जांच की और इस संबंध में आपसे तथा आपके सहयोगियों से विस्तार से चर्चा हुई। समिति का विश्वास है कि आप संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन पर किए गए माननीय राष्ट्रपति महोदय के आदेशों का अनुपालन करेंगे और राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी शेष लक्ष्यों को शीघ्र पूरा करेंगे तथा कार्यालय की आगामी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इसका मूल्यांकन कर समिति सचिवालय को अविलम्ब सूचित करेंगे।

2. निरीक्षण के दौरान आपके सहयोग के लिए धन्यवाद।

आपका,

मनोज राजोरिया

(डॉ. मनोज राजोरिया)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के खेल रण बाकुरें

Avnil kumar

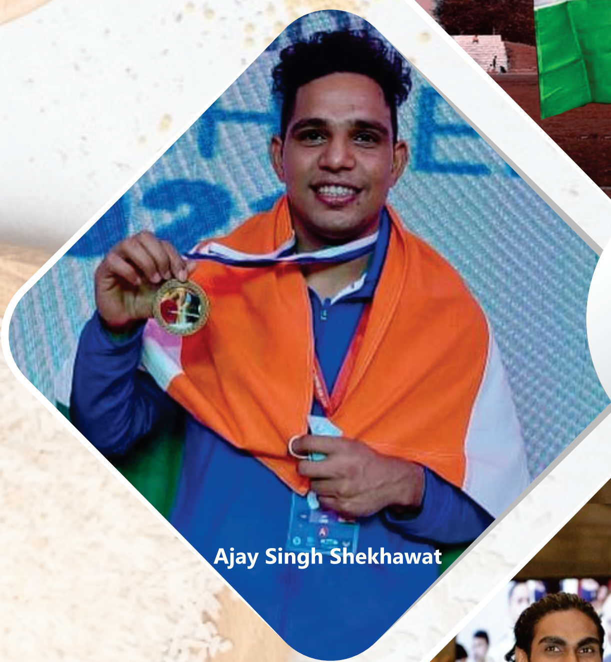

Ajay Singh Shekhawat

Bhavina Patel

Pramod Bhagat

ऑनलाइन पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए सामने दिए गए वेबलिंक का प्रयोग करें

क) ई–पत्रिका:
https://tinyurl.com/42pe7363

ख) पीडीएफ:
https://tinyurl.com/2p97r5am

स्मार्टफोन/टेबलेट पर पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए क्यूआर स्कैनर से सामने दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें

ई–पत्रिका

पीडीएफ